सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHI/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023
www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 201, नई दिल्ली । सोमवार, 30 सितम्बर 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

हिसाब किताब सिर्फ ऊपर वाले ने ही सही लगाया, सबको खाली हाथ भेजा और खाली हाथ बुलाया...

03 मुख्यमंत्री पत्नी रोड शो कर सरायकेला मे ओडिया भाषा में किया संबोधन
06 ग्रामीण भारत की सूरत बदलती कृषि
08 मुख्यमंत्री पत्नी रोड शो कर सरायकेला मे ओडिया भाषा में किया संबोधन

प्राप्त शक्ति का अधूरा विश्लेषण कर नियम और कानून के बाहर की अपनी इच्छा को पूरा करना सीखना हो तो परिवहन विभाग में आसीन आला अधिकारी से सीखें

क्या आप जानते हैं की दिल्ली परिवहन विभाग के आला अधिकारी के लिए नियम और क़ानून क्या है ? बड़ा सवाल

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली परिवहन विभाग एक ऐसा विभाग जिससे दिल्ली में रहने वाले सभी परिवारों को कोई ना कोई कार्य अवश्य रहता है चाहे वह अमीर हो या गरीब। किसी जात से हो या किसी बिरादरी से। अपना कार्य करता हों या नौकरी। महिला हो या पुरुष। 18 साल या उससे अधिक आयु वाले सभी नागरिकों को किसी ना किसी रूप में परिवहन विभाग से कार्य रहता ही है ओर इसका भरपूर फायदा उठाने में लगे हैं कार्यरत आला अधिकारी। आज की तारीख में आला अधिकारी के लिए कोई आदेश, कोई दिशा निर्देश, कोई एडवाइजरी चाहे वह किसी के भी द्वारा जारी की गई हों। **किसी से का तात्पर्य आम आदमी से नही बल्कि माननीय उच्चतम न्यायालय, माननीय उच्च न्यायालय, माननीय कैट, गृह मंत्रालय भारत सरकार, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय, दिल्ली के उपराज्यपाल एमवी एक्ट, एमवी रूल, सीएमवीआर इत्यादि से है।** दिल्ली परिवहन विभाग के आला अधिकारी द्वारा इन दिनों में किए गए अत्याधिक आदेश इन सभी (किसी के भी द्वारा जारी आदेशो, दिशा निर्देशों, एडवाइजरी) को दरकिनार कर अपनी इच्छा के अनुसार जारी किए हैं। परिवहन विभाग के आला अधिकारी द्वारा आदेशित सभी आदेशों/ दिशा निर्देशों और एडवाइजरी को जानते और देखते हुए भी हमारे देश की न्यायप्रणाली (माननीय उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालय) संज्ञान लेने की जगह चुप बैठी है और साथ ही दिल्ली के उपराज्यपाल, मुख्यमंत्री, मुख्य सचिव, मंत्री परिवहन भी चुपचाप देख कर आंखे- कान बंद कर के बैठे हैं आखिर क्यों, क्या आप जानते हैं। **सबसे प्रमुख कारण परिवहन विभाग के आला अधिकारी द्वारा जितने भी नियम और क़ानून के बाहर आदेश किए गए या किए जाने वाले है उन सभी से सरकार के खर्चों में कमी आती हैं और राजस्व में इजाफा।** क्या जनहित में खोले गए कार्यालय या राज्य सरकार या दिल्ली के प्रशासक उपराज्यपाल दिल्ली जिन्हे भारत देश के राष्ट्रपति के बराबर राज्य के अंतर्गत कार्यों के लिए शक्ति प्रदान है का कार्य जनहित को देखना है या जनता का अहित कर

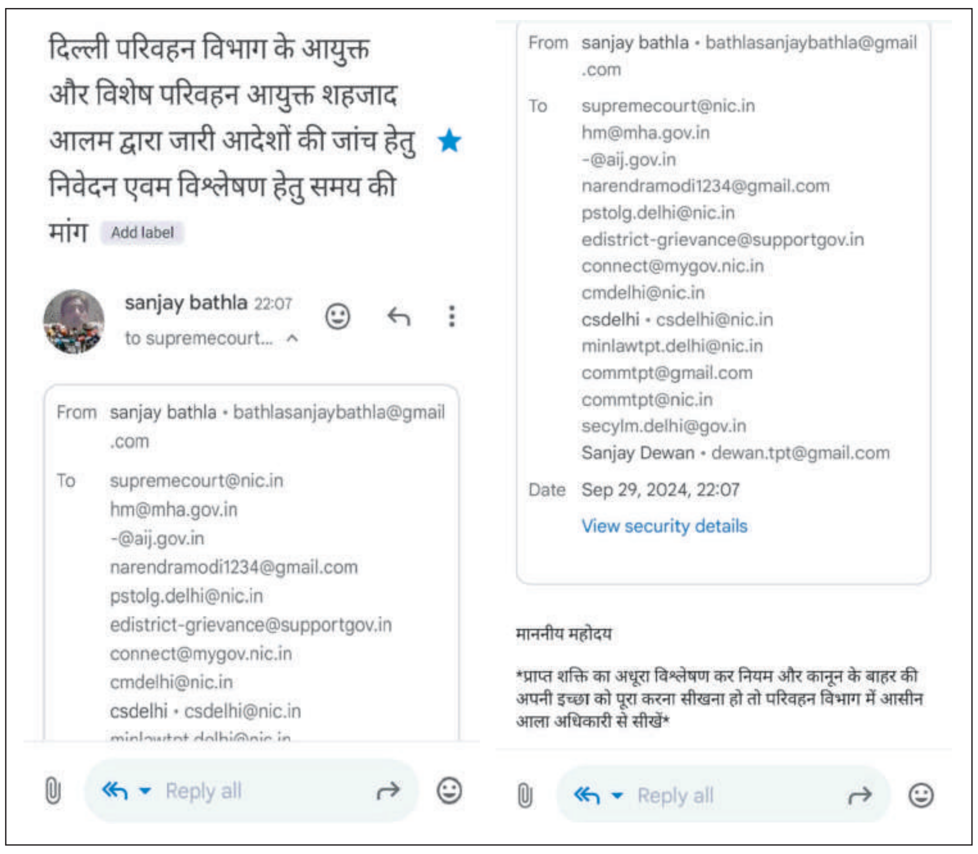
दिल्ली परिवहन विभाग के आयुक्त और विशेष परिवहन आयुक्त शहजाद आलम द्वारा जारी आदेशों की जांच हेतु निवेदन एवम विश्लेषण हेतु समय की मांग Add label

sanjay bathla 22:07
to supremecourt...

From sanjay bathla • bathlasanjaybathla@gmail.com
To supremecourt@nic.in
hm@mha.gov.in
-@aij.gov.in
narendramodi1234@gmail.com
pstolg.delhi@nic.in
edistrict-grievance@supportgov.in
connect@mygov.nic.in
cmdelhi@nic.in
csdelhi • csdelhi@nic.in
minlawtpt.delhi@nic.in
commtpt@gmail.com
commtpt@nic.in
secylm.delhi@gov.in
Sanjay Dewan • dewan.tpt@gmail.com
Date Sep 29, 2024, 22:07
View security details

माननीय महोदय

प्राप्त शक्ति का अधूरा विश्लेषण कर नियम और कानून के बाहर की अपनी इच्छा को पूरा करना सीखना हो तो परिवहन विभाग में आसीन आला अधिकारी से सीखें

Reply all

सरकारी खर्चों में कटौती और सरकारी राजस्व में इजाफा करवाना ? बड़ा सवाल ! दिल्ली परिवहन विभाग के आला अधिकारी ने माननीय उच्चतम न्यायालय के दिशा निर्देश, देश की कई राज्यों के उच्च न्यायालयो द्वारा इसी विषय के प्रति जारी किए गए दिशा निर्देशों, भारत सरकार द्वारा निर्मित किसी पद पर आसीन होने के लिए आवश्यक आरआर, पूर्व में नियुक्त रहें आला अधिकारी द्वारा कोर्ट में विभाग की तरफ से दिया गया एफिडेविट, दिल्ली के लॉ विभाग के द्वारा जारी राय को दरकिनार कर दिल्ली राज्य की जनता को लर्निंग लाइसेंस, लाइसेंस, आरसी, वाहनो के परमिट और वाहनों के जांच प्रमाण पत्र जारी करने वाले पदों पर नियमानुसार होने वाले अधिकारियो की जगह अपनी इच्छा के नियम के विरुद्ध अधिकारियो को नियुक्त कर दिया है। **हमारी दिल्ली के उपराज्यपाल से बस इतनी सी प्रार्थना है की परिवहन विभाग के आला अधिकारी द्वारा इन पदों पर आसिन किए गए अधिकारियो का सच बता कर माननीय उच्चतम न्यायालय, माननीय उच्च न्यायालयो से इन अधिकारियो द्वारा जनता को जारी हुए और होने वाले लर्निंग लाइसेंस, लाइसेंस, बेज, आरसी, परमिट और वाहन जांच पत्र को जनहित में मान्य सिद्ध करवाकर दे** और नही करवा सकते तो जनहित में तत्काल प्रभाव से परिवहन विभाग के आला अधिकारी की इच्छा से गलत आसिन किए गए अधिकारियो को इन पदों से हटाने और सही नियमानुसार अधिकारी को नियुक्त करवाने के आदेश जारी करने की कृपा करें।

विक्ट्री ईवी इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड ने दिल्ली में अपनी एल5 इलेक्ट्रिक ऑटो सीरीज लॉन्च की

विक्ट्री ईवी इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड ने दिल्ली में एक भव्य और जीवंत कार्यक्रम में अपनी नवीनतम एल5 इलेक्ट्रिक ऑटो सीरीज लॉन्च की है।

कंपनी के निदेशक संजय पोपली और पलक पोपली ने नए उत्पादों की विशेषताओं और अद्वितीय विक्रय बिंदुओं के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। विक्ट्री एल5 ऑटो की सबसे खास बात यह है कि यह एक बार चार्ज करने पर 180-200 किलोमीटर तक चल सकती है, जिससे ड्राइवर दूसरे इलेक्ट्रिक ऑटो की तुलना में काफी ज़्यादा कमा सकते हैं। कंपनी ने इस सीरीज़ में तीन पैसेंजर मॉडल और दो कार्गो लोडर लॉन्च किए हैं। भीड़भाड़ वाले शहरों के लिए डी+3 सिटी स्टार मॉडल पेश किया गया है, जबकि विराट मॉडल ग्रामीण इलाकों के लिए डिज़ाइन किया गया है। 6 से 12 यात्रियों के लिए उपयुक्त किंग मॉडल भी लॉन्च किया गया है।

कंपनी का मुख्य लक्ष्य पुराने पेट्रोल और डीजल ऑटो को बदलना है। इसे हासिल करने के लिए, विक्ट्री इलेक्ट्रिक भारत के हर शहर के लिए योजनाओं पर सरकार के साथ काम कर रही है और उसने हर राज्य और शहर में डीलरों की नियुक्ति की प्रक्रिया शुरू कर दी है।

इस भव्य लॉन्च कार्यक्रम में, विक्ट्री ईवी ने श्रीनगर (कश्मीर), महाराष्ट्र, औरंगाबाद, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, ओडिशा, झारखंड, मध्य प्रदेश, गुजरात, हरियाणा, तमिलनाडु और केरल सहित अन्य कई राज्यों में लगभग 12 डीलरों और 4 वितरकों की नियुक्ति की।

विक्ट्री ईवी इंडिया देश की सबसे पुरानी विनिर्माण कंपनियों में से एक है, जिसका प्लांट उन्नत स्वचालित मशीनों से सुसज्जित है। कंपनी 200,000 वर्ग फीट क्षेत्र में ई-रिक्शा और ई-स्कूटर सहित कई तरह के ईवी उत्पाद बनाती है।

कंपनी के उत्पादों और अन्य विवरणों के बारे में अधिक जानकारी के लिए कृपया विक्ट्री ईवी इंडिया वेबसाइट पर जाएं।

दिल्ली के वाहन चालकों के लिए अच्छी खबर, हर इलाके में होगा फिटनेस जांच केंद्र; परिवहन विभाग ने निकाले टेंडर

दिल्ली के वाहन चालकों के लिए अच्छी खबर है। अब उन्हें फिटनेस जांच के लिए इधर-उधर भटकना नहीं पड़ेगा। परिवहन विभाग ने हर जिले में ऑटोमेटेड फिटनेस जांच केंद्र खोलने का फैसला किया है। इन केंद्रों पर 20 मिनट में किसी भी वाहन की फिटनेस जांच हो जाएगी। इससे वाहनों की फिटनेस जांच की उपलब्धता बढ़ जाएगी और वाहन चालकों को सुविधा होगी।

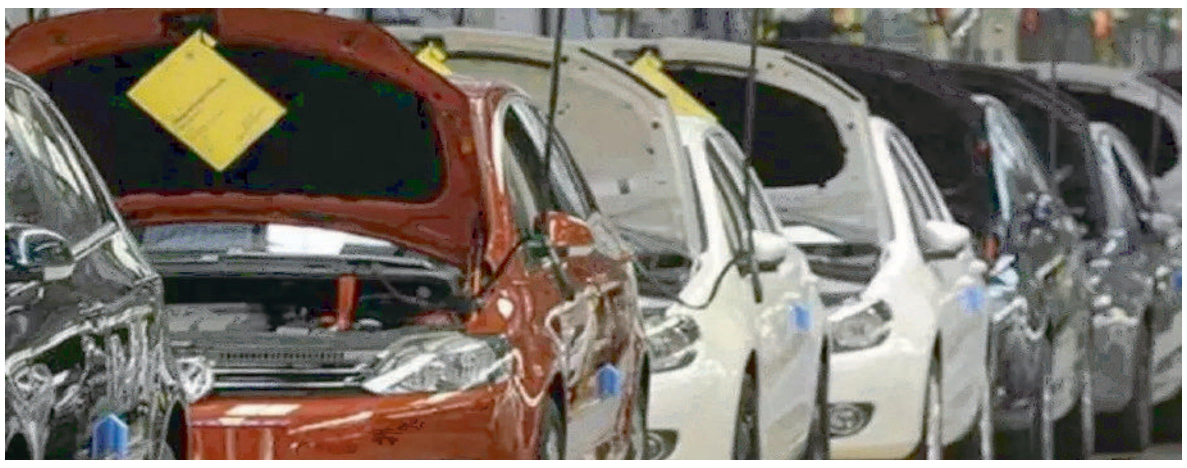

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी में वाहन चालकों को फिटनेस जांच कराने के लिए परेशान होना नहीं पड़ेगा। दिल्ली में हर इलाके में फिटनेस जांच केंद्र होगा। इसे अपग्रेड भी किया जाएगा, जिसमें मानव हस्तक्षेप बिल्कुल बंद कर दिया जाएगा। सभी फिटनेस जांच केंद्र ऑटोमेटेड होंगे। इसी कड़ी में परिवहन विभाग ने पांच जिलों में फिटनेस जांच केंद्र स्थापित करने के लिए टेंडर जारी किए हैं।

जिसमें निजी कंपनियों के साथ मिलकर सरकार इस काम को अंजाम देगी। यह कार्य पीपीपी (पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप) मोड पर किया जाएगा। सरकार भी इस व्यवस्था में अपना हिस्सा देगी। जो कंपनी आटोमेडट जांच केंद्र स्थपित करेगी, वहीं कंपनी इसे चलाएगी और इसका रखरखाव करेगी। बुराड़ी को छोड़कर अन्य स्थानों पर कंपनियां ही केंद्र खोलने के लिए भूमि उपलब्ध कराएंगी।

फिलहाल बुराड़ी और झुलझुली में ही फिटनेस केंद्र

इससे वाहनों के फिटनेस जांच केंद्र की उपलब्धता बढ़ जाएगी। मौजूदा समय में दिल्ली में केवल बुराड़ी और झुलझुली में ही फिटनेस जांच केंद्र है। बुराड़ी में छोटों वाहनों का फिटनेस होता है, जहां जांच मैनुअल तरीके से होती है, जबकि झुलझुली में बड़े वाहनों के फिटनेस की जांच होती है।यह केंद्र आटोमेटेड है। ऐसे में दोनों केंद्रों पर वाहनों को दबाव अधिक होता है।

ऑटोमेटेड टेस्टिंग केंद्र के लिए निविदा जारी

परिवहन विभाग ने ऑटोमेटेड टेस्टिंग केंद्र खोलने के लिए निविदा जारी कर दी है। उत्तरी, उत्तर पश्चिम, पश्चिम, दक्षिण और दक्षिण पूर्व जिले में ये केंद्र खोले जाएंगे। केंद्र में 20 मिनट में किसी भी वाहन के फिटनेस की जांच हो जाया करेगी। आटोमेटेड टेस्टिंग केंद्र में स्वचालित मशीनों से वाहन के फिटनेस की सटीक जांच होती है। इसमें किसी भी तरह की गड़बड़ी आशंका नहीं है।

किन वाहनों को कितने साल में जांच अनिवार्य

बता दें कि सड़क, परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय की ओर से सभी राज्यों को ऑटोमेटेड टेस्टिंग केंद्र में ही वाहनों के फिटनेस की जांच कराने के लिए कहा गया है। इसमें हल्के निजी वाहनों को दूर रखा गया है और इनमें केवल 15 साल से अधिक पुराने वाहनों के फिर से रजिस्ट्रेशन के समय फिटनेस की जांच करानी होती है। ध्यान देने की बात है कि आठ वर्ष तक पुराने भारी, मझौले और हल्के कामर्शियल वाहनों को हर दो वर्ष में फिटनेस जांच अनिवार्य रूप से कराना होता है। वहीं आठ साल से पुराने कामर्शियल वाहनों के लिए हर साल की अनिवार्यता है।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

नवरात्र : मां दुर्गा की पूजा का श्रेष्ठ समय

नवरात्र हिंदू धर्म ग्रंथ एवं पुराणों के अनुसार माता भगवती की आराधना का श्रेष्ठ समय होता है। भारत में नवरात्र का पर्व एक ऐसा पर्व है जो हमारी संस्कृति में महिलाओं के गरिमामय स्थान को दर्शाता है। वर्ष में चार नवरात्र चैत्र, आषाढ़, आश्विन और माघ महीने की शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक नौ दिन के होते हैं, परंतु प्रसिद्धि में चैत्र और आश्विन के नवरात्र ही मुख्य माने जाते हैं। इनमें भी देवीभक्त आश्विन के नवरात्र अधिक करते हैं। इनको यथाक्रम वासंती और शारदीय नवरात्र भी कहते हैं। इनका आरंभ क्रमशः चैत्र और आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से होता है। अतः यह प्रतिपदा सम्मुखी शुभ होती है'

नौ देवियां

शैलपुत्री प्रथम, ब्रह्मचारिणी द्वितीय, चंद्रघंटा तृतीय, कूष्मांडा चतुर्थ, स्कंदमाता पंचम, कात्यायनी षष्टम, कालरात्रि सप्तम, महागौरी अष्टम व सिद्धिदात्री नवम। नौ दिन यानी हिंदी माह चैत्र और आश्विन के शुक्ल पक्ष की पड़वा यानी पहली तिथि से नौवीं तिथि तक प्रत्येक दिन की एक देवी मतलब नौ द्वार वाले दुर्ग के भीतर रहने वाली जीवनी शक्ति रूपी दुर्गा के नौ रूप हैं।

नवरात्रों का महत्त्व

नवरात्रों में लोग अपनी आध्यात्मिक और मानसिक शक्तियों में वृद्धि करने के लिए अनेक प्रकार के उपवास, संयम, नियम, भजन, पूजन, योग साधना आदि करते हैं। सभी नवरात्रों में माता के सभी 51 पीठों पर भक्त विशेष रूप से माता के दर्शनों के लिए एकत्रित होते हैं। जिनके लिए वहां जाना संभव नहीं होता है, वे अपने निवास के निकट ही माता के मंदिर में दर्शन कर लेते हैं। नवरात्र शब्द नव अहोरात्रों का बोध कराता है। इस समय शक्ति के नव रूपों की उपासना की जाती है। रात्रि शब्द सिद्धि का प्रतीक है। उपासना और सिद्धियों के लिए दिन से अधिक रात्रियों को महत्त्व दिया जाता है। हिंदुओं के अधिकतर पर्व रात्रियों में ही मनाए जाते हैं। रात्रि में मनाए जाने वाले पर्वों में दीपावली, होलिका दहन, दशहरा आदि आते हैं। शिवरात्रि और नवरात्रे भी इनमें से कुछ एक हैं। रात्रि समय में जिन पर्वों को मनाया जाता है, उन पर्वों में सिद्धि प्राप्ति के कार्य विशेष रूप से किए जाते हैं। नवरात्रों के साथ रात्रि जोडऩे का भी यही अर्थ है कि माता शक्ति के इन नौ दिनों की रात्रियों को मनन व चिंतन के लिए प्रयोग करना चाहिए।

शारदीय नवरात्र

शारदीय नवरात्र आश्विन शुक्ल पक्ष की प्रतिप्रदा से शुरू होता है। आश्विन मास में आने वाले नवरात्र का अधिक महत्त्व माना गया है। इसी नवरात्र में जगह-जगह गरबों की धूम रहती है।

चैत्र या वासंती नवरात्र

चैत्र या वासंती नवरात्र का प्रारंभ चैत्र मास शुक्ल पक्ष की प्रतिप्रदा से होता है। चैत्र में आने वाले नवरात्र में अपने कुल देवी-देवताओं की पूजा का विशेष प्रावधान माना गया है। वैसे दोनों ही नवरात्र मनाए जाते हैं। फिर भी इस नवरात्र को कुल देवी-देवताओं के पूजन की दृष्टि से विशेष मानते हैं। आज के भागमभाग के युग में अधिकांश लोग अपने कुल देवी-देवताओं को भूलते जा रहे हैं। कुछ लोग समयाभाव के कारण भी पूजा-पाठ में कम ध्यान दे पाते हैं। जबकि इस ओर ध्यान देकर आने वाली अनजान मुसीबतों से बचा जा सकता है। ये कोई अंधविश्वास नहीं, बल्कि शाश्वत सत्य है।

नवरात्र या नवरात्रि

संस्कृत व्याकरण के अनुसार नवरात्रि कहना त्रुटिपूर्ण है। नौ रात्रियों का समाहार, समूह होने के कारण से द्वंद्व समास होने के कारण यह शब्द पुलिंग रूप नवरात्र में ही शुद्ध है। पृथ्वी द्वारा सूर्य की परिक्रमा के काल में एक साल की चार संधियां हैं। उनमें मार्च व सितंबर माह में पडऩे वाली गोल संधियों में साल के दो मुख्य नवरात्र पड़ते हैं। इस समय रोगाणु आक्रमण की सर्वाधिक संभावना होती है। ऋतु संधियों में अक्सर शारीरिक बीमारियां बढ़ती हैं, अतः उस समय स्वस्थ रहने के लिए, शरीर को शुद्ध रखने के लिए और तन-मन को निर्मल और पूर्णतः स्वस्थ रखने के लिए की जाने वाली प्रक्रिया का नाम नवरात्र है।

नवरात्र कथा

पौराणिक कथानुसार प्राचीन काल में दुर्गम नामक राक्षस ने कठोर तपस्या कर ब्रह्मा जी को प्रसन्न कर लिया। उनसे वरदान लेने के बाद उसने चारों वेदों व पुराणों को कब्जे में लेकर कहीं छिपा दिया, जिस कारण पूरे संसार में वैदिक कर्म बंद हो गया। इस वजह से चारों ओर घोर अकाल पड़ गया। पेड़-पौधे व नदी-नाले सूखने लगे। चारों ओर हाहाकार मच गया। जीव-जंतु मरने लगे। सृष्टि का विनाश होने लगा। सृष्टि को बचाने के लिए देवताओं ने व्रत रखकर नौ दिन तक मां जगदंबा की आराधना की और माता से सृष्टि को बचाने की विनती की। तब मां भगवती व असुर दुर्गम के बीच घमासान युद्ध हुआ। मां भगवती ने दुर्गम का वध कर देवताओं को निर्भय कर दिया। तभी से नवदुर्गा तथा नव व्रत का शुभारंभ हुआ।

नियम और मान्यताएं

नवरात्र में देवी मां के व्रत रखे जाते हैं। स्थान-स्थान पर देवी मां की मूर्तियां बनाकर उनकी विशेष पूजा की जाती है। घरों में भी अनेक स्थानों पर कलश स्थापना कर दुर्गा सप्तशती पाठ आदि होते हैं। नरीसेमरी में देवी मां की जोत के लिए श्रद्धालु आते हैं और पूरे नवरात्र के दिनों में भारी मेला रहता है। शारदीय नवरात्र आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तक यह व्रत किए जाते हैं। भगवती के नौ प्रमुख रूप (अवतार) हैं तथा प्रत्येक बार 9-9 दिन ही ये विशिष्ट पूजाएं की जाती हैं। इस काल को नवरात्र कहा जाता है। वर्ष में दो बार भगवती भवानी की विशेष पूजा की जाती है। इनमें एक नवरात्र तो चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक होते हैं और दूसरे श्राद्धपक्ष के दूसरे दिन आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से आश्विन शुक्ल नवमी तक। आश्विन मास के इन नवरात्रों को शारदीय नवरात्र कहा जाता है क्योंकि इस समय शरद ऋतु होती है। इस व्रत में नौ दिन तक भगवती दुर्गा का पूजन, दुर्गा सप्तशती का पाठ तथा एक समय भोजन का व्रत धारण किया जाता है।

प्रतिपदा के दिन प्रातः स्नानादि करके संकल्प करें तथा स्वयं या पंडित के द्वारा मिट्टी की वेदी बनाकर जौ बोने चाहिए। उसी पर घट स्थापना करें। फिर घट के ऊपर कुलदेवी की प्रतिमा स्थापित कर उसका पूजन करें तथा दुर्गा सप्तशती का पाठ कराएं। पाठ-पूजन के समय अखंड दीप जलता रहना चाहिए। वैष्णव लोग राम की मूर्ति स्थापित कर रामायण का पाठ करते हैं। दुर्गा अष्टमी तथा नवमी को भगवती दुर्गा देवी की पूर्ण आहुति दी जाती है। नैवेद्य, चना, हलवा, खीर आदि से भोग लगाकर कन्या तथा छोटे बच्चों को भोजन कराना चाहिए। नवरात्र ही शक्ति पूजा का समय है, इसलिए नवरात्र में इन शक्तियों की पूजा करनी चाहिए।

प्राचीन भारत में नारी...

प्राचीन भारतीय समाज में नारियों का सम्मान और आदर आदर्श रूप में था। वह माता पत्नी पुत्री बहन आदि के रूप में परिवार में आदृत थी। समाज उसके प्रति श्रद्धा और आस्था रखता था। धर्म शास्त्रों में तो शक्ति रूप में आस्था की विषय वस्तु थी। इन सब के बाद भी प्राचीन भारत में नारियों की स्थिति सदैव सामान नहीं रही। विभिन्न कालों मे उनकी स्थिति परिवर्तनशील थी। संक्षेप में उनकी विभिन्न कालों में स्थिति का विवरण निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है।

सैधव सभ्यता युगीन नारी :

भारत के प्राचीनतम माने जाने वाली सेंधव सभ्यता में नारियों की स्पष्ट स्थिति जानने के स्रोत उपलब्ध नहीं है। विभिन्न पूरा स्थलों से प्राप्त पूरा अवशेषों के आधार पर विद्वानों ने उनकी स्थिति का आकलन किया है। मोहनजोदड़ो हड़प्पा चन्हूदरो आदि स्थलों से नारियों की

मृण्मूर्तियां बहुतायत रूप से प्राप्त हुई हैं। सर जान मार्शल अर्नेस्ट मैके ने इन नारी मूर्तियो के आधार पर यह स्थापित किया कि उस समय मातृ देवी की पूजा का प्रचलन था। कतिपय मूहरो पर नारी के सर्जनात्मक शक्ति को प्रतिको के रूप में भी दर्शाया गया है। इस आधार पर नारी के सुखद पूज्य और गरिमामय स्थिति का अनुमान किया जा सकता है।

प्राचीन भारतीय समाज में नारियों का सम्मान और आदर आदर्श रूप में था। वह माता पत्नी पुत्री बहन आदि के रूप में परिवार में आदृत थी। समाज उसके प्रति श्रद्धा और आस्था रखता था। धर्म शास्त्रों में तो शक्ति रूप में आस्था की विषय वस्तु थी। इन सब के बाद भी प्राचीन भारत में नारियों की स्थिति सदैव सामान नहीं रही। विभिन्न कालों मे उनकी स्थिति परिवर्तनशील थी। संक्षेप में उनकी विभिन्न कालों में स्थिति का विवरण निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है।

सैधव सभ्यता युगीन नारी :

भारत के प्राचीनतम माने जाने वाली सेंधव सभ्यता में नारियों की स्पष्ट स्थिति जानने के स्रोत उपलब्ध नहीं है। विभिन्न पूरा

स्थलों से प्राप्त पूरा अवशेषों के आधार पर विद्वानों ने उनकी स्थिति का आकलन किया है। मोहनजोदड़ो हड़प्पा चन्हूदरो आदि स्थलों से नारियों की मृण्मूर्तियां बहुतायत रूप से प्राप्त हुई हैं। सर जान मार्शल अर्नेस्ट मैके ने इन नारी मूर्तियो के आधार पर यह स्थापित किया कि उस समय मातृ देवी की पूजा का प्रचलन था। कतिपय मूहरो पर नारी के सर्जनात्मक शक्ति को प्रतिको के रूप में भी दर्शाया गया है। इस आधार पर नारी के सुखद पूज्य और गरिमामय स्थिति का अनुमान किया जा सकता है।

महाकाव्यो में नारी :

महाकाव्यो में नारी के अच्छे और बुरे दोनों स्थितियों के दर्शन होते हैं। उनकी स्वतंत्रता और स्वच्छंदता में कोई विशेष प्रतिबंध नहीं लगा था। रामायण में सीता और महाभारत में द्रौपदी कुंती माद्री का विवरण इस का उदाहरण है। सामाजिक और धार्मिक गतिविधियों में उनका योगदान था। महाभारत के अनुसार उनकी अनुपस्थिति में सारे कार्य अपूर्ण हैं। रामायण में आया है कि अश्वमेध में राम को सीता की अनुपस्थिति से स्वर्ण प्रतिमा रखनी पड़ी। इस युग में नारी पूजा पूर्णतया प्रतिष्ठित थी। शिक्षा के क्षेत्र में भी नारिया अग्रणी थी। कुंती द्रौपदी उत्तरा कैकेयी ही आदि उच्च शिक्षित महिलाएं थी। इन सब के बाद भी नारी वस्तु हो गई थी इसे धनादि के साथ जूए में हारा जीता जाता था।

छठी शताब्दी ईसा पूर्व से मौर्य काल तक :

बौद्ध ग्रन्थो में नारियों की स्थिति के दर्शन होते थे। संयुक्त निकाय में कहा गया है कि गुणवती कन्या को पुत्र से भी अच्छा समझना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में इनका सहयोग महत्वपूर्ण था। विद्या धर्म और दर्शन के प्रति उनकी अगाध रुचि थी। थेरी गाथा में 32 ब्रह्माचारिणी 18 विवाहित भिक्षुणीयो का वर्णन है। नारियां बौद्ध आगमों की शिक्षिका के रूप में विख्यात थी। शुभा सुमेधा खेमा अनोपम सुभद्रा भद्रकुण्केशा ऐसी नारियां थी जिनकी विद्वता दूर-दूर तक विख्यात थी। जैन साहित्य भी ऐसी नरियों के वर्णन से भरे हैं। कौशांबी नरेश की पुत्री जयन्ता ज्ञान और दर्शन में पारंगत थी। पाणिनि सूचित करते हैं की नारियां शिक्षिका के रूप में भी जीवन चलाती थी। यह उपाध्याया कही जाती थी। महिला शिक्षा शालाओं का उल्लेख पणिनि ने किया है। इस काल में स्त्रियों को कुछ हीन समझा जाता था। बुद्ध ने बड़ी कठिनता से उन्हें संघ में प्रवेश की आज्ञा दी।

मौर्य उत्तर एवं गुप्त काल तक :

मौर्य के बाद और गुप्तों के कल तक स्थिति में परिवर्तन हो चुका था। अधिकांश स्मृतियों में उनकी स्थिति अत्यंत निम्नतर हो गई थी। इसा पूर्व दूसरी सती तक उपनयन वेद अध्ययन आदि संस्कार उनके लिए वर्जित कर दिए गए। मनु के शब्दों में पति ही कन्या का आचार्य विवाह, उनका उपनयन पति सेवा ही उनका आश्रम और गृह के कार्य ही उनके धार्मिक अनुष्ठान है उन्हें शूद्रों की कोटि में खड़ा कर दिया गया। इस संबंध में सभी स्मृतिकार एकमत है स्मृतियों मे उनकी आलोचना की गई। उन्हें स्वतंत्रता के योग्य नहीं माना गया। मनु ने लिखा। लेकिन व्यवहार में उनका आदर भी था। मनु ने ही लिखा है कि ₹यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमंते तत्र देवता₹ अर्थात जहां नारियो की पूजा होती है वहां देवता विचरण करते हैं। पतंजलि ने भी शिक्षिकाओं का वर्णन किया है। पुराणों में हमें दोनों स्थितियों के दर्शन होते हैं। पुराणों में भुवना अपर्णा एकवर्णा एक पाटला मेना धारिणी आदि अनेक ब्रह्मवादिनी और विदुषी नारियों का वर्णन है। ललित कलाओं में भी ये पारंगत थी। लेकिन नारियों से संबंधित अधिकांश कुरीतिया भी इस कल तक उत्पन्न हो चुकी थी, जैसे बाल विवाह, विधवा, दासी, नारी परतंत्रता आदि अभिजात वर्ग में पर्दा प्रथा प्रारंभ हो गया। भृच्छकटिकम ललितविस्तार आदि में उदाहरण मिलते हैं। उनको संपत्ति के अधिकार तो थे लेकिन पुरुषों के बाद ही इनके दायाधिकार की गणना की जाती थी।

गुप्तोत्तर काल में नारी600 ईसा पूर्व से 1200 ईसा पूर्व तक :

पूर्व मध्यकाल में नारियों की स्थिति रूढियो में फस गई थी। सती प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह आदि कुरीतियों ने समाज को आच्छादित कर दिया। टीकाकरण मेघातिथि विज्ञानेश्वर विश्वरूप अपरार्क ने नारी के लिए गृह शिक्षा की ही व्यवस्था रखी। अभिजात वर्ग से ही उच्च शिक्षित महिलाएं उदित होती थी। पुत्रियां दुख समझी जाने लगी। कथा सरित्सागर के अनुसार पुत्र सुख का प्रतीक और पुत्रियां दुख का मूल है। यधपि कुछ विदुषी और राजशास्त्र में प्रवीण नारियों के उदाहरण भी प्राप्त है। रेखा रोहा माधवी अवंती सुंदरी मंडनमिश्र की पत्नी प्रभावती गुप्ता राजश्री नैनिका दिद्दा सुगंध अक्का देवी भैला देवी जैसी कवित्रियों और शासिकाओं के वर्णन मिलते हैं। इस युग में वेश्यावृत्ति का भी प्रसार हुआ संपत्ति के अधिकार स्मृतियों के समान ही रहे।

शारदीय नवरात्र 2024 विशेष

इस बार नवरात्रों में माता पालकी के वाहन पर सवार होकर आएगी ।

3 अक्टूबर 2024 दिन गुरुवार को कलश स्थापना का शुभ समय सुबह 0 6 : 00 Am से दोपहर को 0 : 1 : 00 Pm तक है ।

तारीख - दिन - तिथि - नवरात्रे - समय - देवी ।

(1) 3 अक्टूबर - गुरुवार - प्रतिपदा तिथि - 26 : 59 Am - माता शैलपुत्री देवी ।

(2) 4 अक्टूबर - द्वितीया तिथि - शुक्रवार - 2 9 : 3 1 Am - माता ब्रह्मचारिणी देवी ।

(3) 5 अक्टूबर - तृतीया तिथि - शनिवार - माता चंद्रघंटा देवी ।

(4) 6 अक्टूबर - तृतीया तिथि (0 7 : 5 0 Am तक चंद्रघंटा देवी) रविवार - चतुर्थी तिथि - माता कुष्मांडा देवी ।

(5) 7 अक्टूबर - चतुर्थी तिथि - सोमवार - 0 9 : 48 Am - माता कुष्मांडा देवी बाद में माता स्कंदमाता देवी ।

(6) 8 अक्टूबर - मंगलवार - पंचमी तिथि - 11 : 19 Am - माता स्कंद माता देवी बाद में माता कात्यानी देवी ।

(7) 9 अक्टूबर - बुधवार - षष्ठी तिथि - 1 2 : 1 5 Pm - माता कात्यानी देवी 12 : 15 Pm तक बाद में माता कालरात्रि देवी ।

(8) 10 अक्टूबर - गुरुवार - सप्तमी तिथि - 12 : 32 Pm तक - माता कालरात्रि देवी बाद में माता महागौरी देवी ।

(9) 11 अक्टूबर - शुक्रवार - अष्टमी तिथि - 12 : 0 7 Pm तक - माता महागौरी देवी बाद में माता सिद्धिदात्री देवी इस दिन अष्टमी तिथि एवं नवमी तिथि दोनों दिन की कन्या पूजन होगा ।

(10) 12 अक्टूबर - शनिवार - नवमी तिथि - 10 : 59 Am तक रहेगी ।

विजयदशमी(दशहरा) पर्व घरों में सुबह 11:00 बजे से दोपहर को 2:00 बजे के मध्य मनाया जाएगा ।

(11) 14 अक्टूबर - सोमवार - एकादशी व्रत ।

(12) 15 अक्टूबर - मंगलवार - प्रदोष व्रत ।

(13) 16 अक्टूबर - बुधवार - शरद पूर्णिमा व्रत ।

(14) 17 अक्टूबर - गुरुवार - अश्वनी पूर्णिमा एवं श्री सत्यनारायण व्रत एवं बाल्मीकि जयंती ।

(15) 20 अक्टूबर - रविवार - करवा चौथ व्रत ।

(16) 24 अक्टूबर - गुरुवार - अहोई अष्टमी व्रत ।

(17) 28 अक्टूबर - सोमवार - रमा एकादशी व्रत एवं गोवतस द्वादशी

(18) 29 अक्टूबर - मंगलवार - प्रदोष व्रत एवं धनतेरस ।

(19) 30 अक्टूबर - बुधवार - हनुमान जयंती ।

(20) 31 अक्टूबर - गुरुवार - नरक चतुर्दशी (छोटी दीपावली) ।

एक महीने में पीडब्ल्यूडी की 1400 किमी सड़कें रिपेयर कर दी जाएंगी- सीएम आतिशी

सुषमा रानी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल द्वारा दिल्ली की टूटी सड़कों को युद्ध स्तर पर ठीक करने को लेकर सीएम आतिशी को सौंपे गए मांग पत्र के बाद से ''आप'' सरकार एक्शन में है। इसे लेकर सीएम आतिशी ने रविवार को अवकाश के बावजूद दिल्ली सचिवालय में सभी मंत्रियों और पीडब्ल्यूडी के साथ मैराथन बैठक कीं। सीएम आतिशी ने निर्णय लिया कि सोमवार से पूरी कैबिनेट स्थानीय विधायकों और पीडब्ल्यूडी के अफसरों के साथ दिल्ली की सड़कों पर उतरेगी। मंत्री एक-एक सड़क का मूल्यांकन करेंगे कि उसकी मरम्मत करनी है या दोबरा बनानी है। इस सप्ताह मूल्यांकन की प्रक्रिया पूरी कर ली जाएगी और इसके अगले सप्ताह से युद्ध स्तर पर सड़कों को ठीक का काम शुरू हो जाएगा। सीएम आतिशी ने बताया कि दीपावली से पहले पीडब्ल्यूडी की 1400 किमी लंबी सड़कों को दुरूस्त करने का लक्ष्य रखा है।

दिल्ली सचिवालय में हुई बैठक के बाद मुख्यमंत्री आतिशी ने प्रेस वार्ता कर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि पिछले दो दिन अरविंद केजरीवाल और मैं दिल्ली के अलग-अलग हिस्सों में सड़कों की स्थिति का निरीक्षण करने गए थे। इस दौरान यह सामने आया कि दिल्ली की सड़कों का बहुत बुरा हाल है। जगह-जगह सड़कें टूटी हुई हैं। बरसात की वजह से सड़कों पर गड्ढे हैं। दिल्ली जल बोर्ड, बीएसईएस और टाटा पावर ने अलग-अलग कारणों से अपने काम किए हैं, लेकिन उसके बाद सड़कों को दोबारा रिपेयर नहीं किया। लिहाजा, दिल्ली की जनता टूटी हुई सड़कों से परेशान है।

उन्होंने बताया कि शुक्रवार को विधानसभा में विशेष सत्र के दौरान अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली की टूटी सड़कों के संबंध में मुझे एक पत्र दिया। उन्होंने सरकार से यह निवेदन किया कि युद्ध स्तर पर दिल्ली की सड़कों को ठीक करने का काम किया जाए। इसी के मद्देनजर रविवार को दिल्ली सचिवालय में एक ऑल मिनिस्टर्स मीटिंग बुलाई गई थी। बैठक में दिल्ली के मुख्य सचिव और पूरा पीडब्ल्यूडी विभाग भी मौजूद रहा। एक घंटे चली इस बैठक में पीडब्ल्यूडी की 1400 किलोमीटर सड़कों की व्यापक समीक्षा हुई कि कौन सी ऐसी सड़कें हैं जो पूरी तरह से टूटी हुई हैं, जिनका पुनर्निर्माण करने की जरूरत है। कौन सी ऐसी

सड़के हैं जिनमें कुछ हिस्से टूटे हुए हैं, जहां 100 से 200 मीटर सड़क का निर्माण करना है और कौन सी वह सड़कें हैं जहां छोटे-छोटे गड्ढे हैं और उन्हें भरने की जरूरत है।

सीएम आतिशी ने कहा कि सोमवार से दिल्ली सरकार का पूरा कैबिनेट दिल्ली की सड़कों पर उतरेगा। सभी मंत्रियों और मैंने खुद दिल्ली के अलग-अलग हिस्सों की जिम्मेदारी ली है, जहां हम खुद ग्राउंड पर जाकर निरीक्षण करेंगे और देखेंगे कि किस सड़क पर क्या काम कराने की जरूरत है। मसलन, अगर किसी सड़क को फिर से बनाने की जरूरत है या किसी सड़क को केवल मरम्मत की जरूरत है या फिर किसी सड़क में सिर्फ गड्ढे हैं, हम उसका मूल्यांकन करेंगे। बतौर मुख्यमंत्री मैंने दक्षिणी दिल्ली और दक्षिण-पूर्वी दिल्ली की जिम्मेदारी ली है। मंत्री सौरभ भारद्वाज ने पूर्वी दिल्ली की जिम्मेदारी ली है। मंत्री गोपाल राय ने उत्तर-पूर्वी दिल्ली की जिम्मेदारी ली है। मंत्री कैलाश गहलोत ने पश्चिमी दिल्ली और दक्षिणी-पश्चिमी दिल्ली की जिम्मेदारी ली है। मंत्री इमरान हुसैन ने केंद्रीय और नई दिल्ली की जिम्मेदारी ली है। जबकि मंत्री मुकेश अहलावत ने नार्थ व नार्थ वेस्ट दिल्ली की जिम्मेदारी ली है।

उन्होंने बताया कि सोमवार सुबह 6 बजे से दिल्ली सरकार के सभी मंत्री सड़कों का निरीक्षण करेंगे। इस दौरान स्थानीय विधायक भी हमारे साथ मौजूद होंगे। साथ ही, पीडब्ल्यूडी के सारे इंजीनियर, जिसमें चीफ इंजीनियर, सुपरिंटेंडेंट इंजीनियर, एक्सीएन, एई, जेई भी मौजूद रहेंगे। अगले एक हफ्ते में दिल्ली में पीडब्ल्यूडी की 1400 किलोमीटर रोड की एक-एक मीटर का निरीक्षण होगा। जैसे ही यह निरीक्षण खत्म होगा, तुरंत अगले हफ्ते से सारी सड़कों की रिपेयरिंग का काम युद्ध स्तर पर शुरू हो

उन्होंने आगे कहा कि पीडब्ल्यूडी विभाग को अक्टूबर के महीने में उसकी 1400 किलोमीटर सड़कों को रिपेयर करने का टारगेट दिया गया है। हम उम्मीद करते हैं कि अक्टूबर महीने के अंत यानी दिवाली तक हम सभी दिल्लीवालों को गड्ढा मुक्त दिल्ली की सड़के दे पाएंगे। जैसा कि अरविंद केजरीवाल ने अपने पत्र में लिखा है, दिल्ली वाले इन टूटी हुई सड़कों से परेशान हैं। और युद्ध स्तर पर इन सभी टूटी हुई सड़कों को ठीक करके हम दिल्लीवालों को गड्ढा मुक्त दिल्ली जरूर देंगे।

केजरीवाल के पत्र पर CM आतिशी और AAP विधायक सड़कों पर उतरेंगे, निरीक्षण करने के बाद खराब सड़कों की होगी मरम्मत

केजरीवाल के पत्र लिखने के बाद एक्शन में आप सरकार दिखाई दे रही है। सीएम का दावा है कि दीपावली तक दिल्ली की सड़कें गड्ढा मुक्त हो जाएंगी। सीएम आतिशी दक्षिणी व दक्षिण पूर्वी गोपाल राय उत्तरी पूर्वी कैलाश गहलोत पश्चिमी व दक्षिण पश्चिमी इमरान हुसैन मध्य व नई दिल्ली सौरभ भारद्वाज पूर्वी तथा मुकेश अहलावत उत्तरी व उत्तर पश्चिमी दिल्ली में सड़कों का निरीक्षण करेंगे।

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल द्वारा दिल्ली की टूटी सड़कों को ठीक करने को लेकर सीएम आतिशी (Delhi CM Atishi) को सौंपे गए मांग पत्र के बाद से आप सरकार एक्शन में है। इसे लेकर सीएम आतिशी ने रविवार को अवकाश के बावजूद दिल्ली सचिवालय में सभी मंत्रियों और पीडब्ल्यूडी के साथ मैराथन बैठक की।

सीएम आतिशी ने निर्णय लिया कि सोमवार से पूरी कैबिनेट स्थानीय विधायकों और पीडब्ल्यूडी के अफसरों के साथ सुबह छह बजे से दिल्ली की सड़कों पर उतरेंगी।

इस सप्ताह करेंगे सड़कों का मूल्यांकन

सीएम और मंत्री एक-एक सड़क का मूल्यांकन करेंगे कि उसकी मरम्मत करनी है या दोबरा बनानी है। इस सप्ताह पीडब्ल्यूडी की 1400 किलोमीटर सड़कों के मूल्यांकन की प्रक्रिया पूरी कर ली जाएगी और इसके अगले सप्ताह से सड़कों को ठीक करने का काम शुरू हो जाएगा। सीएम आतिशी ने बताया कि दीपावली से पहले पीडब्ल्यूडी की सभी सड़कों को दुरुस्त करने का लक्ष्य रखा है।

दिल्ली सचिवालय में हुई बैठक के बाद मुख्यमंत्री ने प्रेस वार्ता कर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि पिछले दो दिन अरविंद केजरीवाल और मैंने दिल्ली के अलग-अलग हिस्सों में सड़कों की स्थिति का निरीक्षण किया है।

सड़कों की इसलिए हुई बदतर हालत

सीएम ने भी माना है कि दिल्ली की सड़कों का बहुत बुरा हाल है। जगह-जगह सड़कें टूटी हुई हैं। बरसात की वजह से सड़कों पर गड्ढे हैं। दिल्ली जल बोर्ड, बीएसइएस और टाटा पावर ने अलग-अलग कारणों से अपने काम किए हैं, लेकिन उसके बाद सड़कों को दोबारा नहीं बनाया है। लिहाजा, दिल्ली की जनता टूटी हुई सड़कों से परेशान है।

रविवार को हुई बैठक में शामिल रहे मंत्री अधिकारी

रविवार को दिल्ली सचिवालय में हुई बैठक में सभी मंत्री, मुख्य सचिव और पूरा पीडब्ल्यूडी विभाग मौजूद रहा। एक घंटे चली इस बैठक में पीडब्ल्यूडी की 1400 किलोमीटर सड़कों की व्यापक समीक्षा हुई कि कौन सी ऐसी सड़कें हैं जो पूरी तरह से टूटी हुई हैं, जिनका पुनर्निर्माण करने की जरूरत है।

कौन सी ऐसी सड़कें हैं जिनमें कुछ हिस्से टूटे हुए हैं, जहां 100 से 200 मीटर सड़क का निर्माण करना है और कौन सी वह सड़कें हैं जहां छोटे-छोटे गड्ढे हैं और उन्हें भरने की जरूरत है।

किस जिला में कौन मंत्री करेगा निरीक्षण

सीएम आतिशी दक्षिणी व दक्षिण पूर्वी, गोपाल राय उत्तरी पूर्वी, कैलाश गहलोत पश्चिमी व दक्षिण पश्चिमी, इमरान हुसैन मध्य व नई दिल्ली, सौरभ भारद्वाज पूर्वी तथा मुकेश अहलावत उत्तरी व उत्तर पश्चिमी दिल्ली में सड़कों का निरीक्षण करेंगे।

एमसीडी की स्थायी समिति चुनाव के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट पहुंची आप

सुषमा रानी

आम आदमी पार्टी (AAP) ने दिल्ली नगर निगम (MCD) की स्थायी समिति के सदस्य के लिए हुए चुनाव को चुनौती देते हुए सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। इससे पहले दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी ने भाजपा पर लोकतंत्र की हत्या करने का आरोप लगाते हुए दावा किया था कि 27 सितंबर को हुआ चुनाव अवैध और असंवैधानिक था।

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी (AAP) ने दिल्ली नगर निगम (MCD) की स्थायी समिति के सदस्य के लिए हुए चुनाव को चुनौती देते हुए सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। इससे पहले दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी ने भाजपा पर लोकतंत्र की हत्या करने का आरोप लगाते हुए दावा किया था कि 27 सितंबर को हुआ चुनाव अवैध और असंवैधानिक था।

भाजपा ने एमसीडी की 18 सदस्यीय स्थायी समिति की रिक्त सीट निर्विरोध जीत ली क्योंकि सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी (आप) के पार्षद मतदान में शामिल नहीं हुए। भाजपा ने हाल ही में एमसीडी की स्थायी समिति में रिक्त पद को भरने के लिए चुनाव को लेकर दिल्ली की मेयर शेली ओबेरॉय के खिलाफ अवमानना कार्यवाही शुरू करने की अपनी याचिका पर तत्काल सुनवाई की मांग करते हुए शीर्ष अदालत का रुख किया था।

आरोपी को दो बार पहले भी जेल चुके थे सिपाही संदीप, तब भी वजह थी शराब

दिल्ली पुलिस ने एक आरोपी सिद्धू उर्फ सीटू को दबोच लिया है जबकि दूसरे आरोपी धर्मेंद्र गुलिया की तलाश जारी है। सिपाई संदीप 2018 व 2020 में दो बार सार्वजनिक स्थान पर शराब पीने के आरोप में धर्मेंद्र को हवालात भेज चुके थे। इसी के चलते वह सिपाही संदीप से रंजिश मान बैठा। शनिवार को भी सिपाही ने उसे साथी के साथ कार में बैठकर शराब पीते पकड़ लिया था।

दिल्ली। बाहरी जिला के नांगलोई इलाके में शनिवार देर रात बेखौफ युवकों ने राजधानी की कानून व्यवस्था की धज्जियां उड़ाते हुए दिल्ली पुलिस के सिपाही संदीप को कुचल कर मार डाला। सार्वजनिक स्थान पर वैगनआर कार में बैठकर शराब पीने से रोकने पर कार सवार दो युवकों ने इस वारदात को अंजाम दिया। आरोपियों की पहचान धर्मेंद्र गुलिया और सिद्धू उर्फ सीटू के रूप में हुई है। धर्मेंद्र को सिपाही संदीप २०१८ व २०२० में दो बार सार्वजनिक स्थान पर शराब पीने के आरोप में हवालात भेज चुका था, जिससे वह सिपाही से रंजिश मान बैठा था। शनिवार देर रात भी सिपाही ने जब उसे साथी सिद्धू के साथ सार्वजनिक स्थान पर कार में बैठकर शराब पीते पकड़ लिया, तब दोनों की सिपाही से जमकर झड़प हुई थी। इसके बाद उन्होंने वारदात को अंजाम दिया। नांगलोई में जब दोनों आरोपियों को सिपाही ने पकड़ा तो उनके खिलाफ कार्रवाई की चेतावनी देते हुए बाइक से थाने की तरफ चल दिए। कुछ दूर जाते ही कार चला रहे धर्मेंद्र गुलिया पीछे से सिपाही की बाइक में जोरदार टक्कर मारते हुए कुचला दिया। वारदात के बाद दोनों मौके से फरार हो गए। घटना के दौरान सिपाही सादे कपड़ों में था। आरोपी उन्हें बाइक समेत करीब दस मीटर तक घसीटते ले गए। बाद में वेगनआर कार आगे खड़ी एक कार से टकराकर रुक गई।

अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट के संस्थापक डॉ हृदयेश कुमार ने शिव मंदिर परिसर तिरखा कॉलोनी बल्लबगढ़ फरीदाबाद में बदलते हुए मौसम में स्वस्थ के लिए आम लोगों को टिप्स दिए : - डॉ हृदयेश कुमार

परिवहन विशेष न्यूज

फरीदाबाद। अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट के संस्थापक डॉ हृदयेश कुमार ने शिव मंदिर परिसर तिरखा कॉलोनी बल्लबगढ़ फरीदाबाद में बदलते हुए मौसम में स्वस्थ के लिए आम लोगों को टिप्स देते हुए बताया कि

आपके दिल को मजबूत करने के लिए 10 युक्तियाँ

अपने दिल की देखभाल करना समग्र स्वास्थ्य और दीर्घायु के लिए आवश्यक है। अपनी दिनचर्या में सरल लेकिन प्रभावी आदतों को शामिल करने से आपके दिल के स्वास्थ्य और कार्य में काफी सुधार हो सकता है।

स्वस्थ आहार बनाए रखें: फलों, सब्जियों, साबुत अनाज, लीन प्रोटीन और स्वस्थ वसा से भरपूर आहार चुनें। संतृप्त वसा, ट्रांस वसा, कोलेस्ट्रॉल और सोडियम का सेवन कम करें। संतुलित आहार आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करके और हृदय रोग के जोखिम को कम करके हृदय स्वास्थ्य का समर्थन करता है।

नियमित रूप से व्यायाम करें: हर हफ़्ते कम से कम 150 मिनट तक तेज़ चलना, जॉगिंग, साइकिल चलाना या तैराकी जैसे एरोबिक व्यायाम करें। इसके अलावा, हृदय की मांसपेशियों की ताकत और समग्र हृदय संबंधी फिटनेस को बेहतर बनाने के लिए सप्ताह में दो दिन शक्ति प्रशिक्षण अभ्यास शामिल करें।

तनाव का प्रबंधन करो: लगातार तनाव दिल की सेहत पर नकारात्मक असर डाल सकता है। तनाव कम करने की तकनीकें अपनाएँ जैसे गहरी साँस लेना, ध्यान, योग, या शौक जो विश्राम और भावनात्मक कल्याण को बढ़ावा देते हैं। धूम्रपान से हृदय और रक्त वाहिकाओं को नुकसान पहुंचता है, जिससे हृदयाघात का खतरा बढ़ जाता है। हृदय रोग. धूम्रपान छोड़ना यह जोखिम काफी हद तक कम हो जाता है और समग्र हृदय स्वास्थ्य में सुधार होता है।

उच्च रक्तचाप हृदय पर दबाव पड़ता है और हृदय रोग का जोखिम बढ़ जाता है। अपने रक्तचाप की नियमित निगरानी करें और इसे स्वस्थ सीमा में रखने के लिए अपने स्वास्थ्य सेवा प्रदाता के साथ मिलकर काम करें।

कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित करें: एलडीएल कोलेस्ट्रॉल (₹खराब₹ कोलेस्ट्रॉल) के उच्च स्तर से धमनियों में प्लाक का निर्माण हो सकता है, जिससे दिल के दौरे और स्ट्रोक का खतरा बढ़ जाता है। आहार, व्यायाम और निर्धारित दवाओं के माध्यम से स्वस्थ कोलेस्ट्रॉल के स्तर को बनाए रखें।

पर्याप्त नींद लो: खराब नींद की गुणवत्ता या अपर्याप्त नींद रक्तचाप को बढ़ा सकती है और हृदय रोग के जोखिम को बढ़ा सकती है। हृदय स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए प्रति रात 7-9 घंटे की अच्छी नींद लेने का लक्ष्य रखें। अत्यधिक शराब का सेवन रक्तचाप बढ़ा सकता है और हृदय रोग में योगदान दे सकता है।

हाइड्रेटेड रहना: पर्याप्त मात्रा में पानी पीने से स्वस्थ रक्त मात्रा बनाए रखने में मदद

मिलती है और हृदय के लिए पूरे शरीर में कुशलतापूर्वक रक्त पंप करना आसान हो जाता है।

हृदय वाल्व को प्राकृतिक रूप से मजबूत बनाना

हृदय के माध्यम से रक्त के प्रवाह को विनियमित करने में हृदय वाल्व महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन वाल्वों को स्वस्थ रखना और सही ढंग से काम करना एक मजबूत, कुशल हृदय को बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

हृदय-स्वस्थ खाद्य पदार्थों का सेवन करें: एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर खाद्य पदार्थों को शामिल करें, ओमेगा - 3 फैटी एसिड, और अन्य पोषक तत्व जो हृदय के स्वास्थ्य का समर्थन करते हैं, जैसे पत्तेदार साग, वसायुक्त मछली, नट्स और जामुन।

हाइड्रेटेड रहना: भरपूर मात्रा में पानी पीने से आपके हृदय वाल्वों की लचीलापन और कार्यक्षमता में सुधार हो सकता है।

दीर्घकालिक तनाव हृदय स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा सकता है, इसलिए ध्यान, योग या गहरी सांस लेने के व्यायाम जैसी तनाव कम करने वाली गतिविधियों में शामिल हों।

अधिक वजन आपके दिल और उसके वाल्व पर अतिरिक्त दबाव डाल सकता है।

हृदय को मजबूत बनाने वाले व्यायाम नियमित शारीरिक गतिविधि आपके हृदय की मांसपेशियों को मजबूत करने और इसके समग्र कार्य को बेहतर बनाने के सबसे प्रभावी तरीकों में से एक है। यहाँ कुछ व्यायाम दिए गए हैं जो आपके हृदय को मजबूत बनाने में मदद कर सकते हैं:

एरोबिक व्यायाम: सप्ताह के अधिकांश दिनों में प्रतिदिन कम से कम 30 मिनट तेज चलना, जॉगिंग करना, तैरना या साइकिल चलाना जैसी गतिविधियों में भाग लें।

मज़बूती की ट्रेनिंग: मांसपेशियों के निर्माण और हृदय संबंधी फिटनेस में सुधार के लिए प्रतिरोध व्यायाम, जैसे भारोत्तोलन या शरीर के वजन वाले व्यायाम, को शामिल करें।

हाई-इंटेंसिटी इंटरवल ट्रेनिंग (HIIT): HIIT वर्कआउट, जिसमें तीव्र व्यायाम के बीच में विश्राम का समय भी शामिल होता है, हृदय को मजबूत बनाने में अत्यधिक प्रभावी हो सकता है।

योग और पिलेट्स: ये कम प्रभाव वाले व्यायाम लचीलेपन, संतुलन और समग्र हृदय स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद कर सकते हैं।

एक पर्यवेक्षित हृदय पुनर्वास कार्यक्रम में भाग लेने से आपको धीरे-धीरे अपनी शारीरिक गतिविधि बढ़ाने और अपने हृदय की कार्यप्रणाली में सुधार करने में मदद मिल सकती है।

दाने और बीज: बादाम, अखरोट और अलसी में स्वस्थ वसा, फाइबर और अन्य पोषक तत्व होते हैं जो हृदय के स्वास्थ्य को बढ़ावा देते हैं।

साबुत अनाज: ओट्स, क्विनोआ और ब्राउन राइस फाइबर के उत्कृष्ट स्रोत हैं, जो कोलेस्ट्रॉल को कम करने और हृदय रोग के जोखिम को कम करने में मदद कर सकते हैं।

पत्तेदार साग: पालक, केल और अन्य पत्तेदार सब्जियां विटामिन, खनिज और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होती हैं जो हृदय की रक्षा करने में मदद कर सकती हैं।

दिल्ली के सरकारी अस्पतालों में डॉक्टर्स की होंगी भर्तियां, अक्टूबर से शुरू होंगे इंटरव्यू; यहां जानें सबकुछ

सुषमा रानी

दिल्ली सरकार ने अस्पतालों में डॉक्टरों की भारी कमी को दूर करने के लिए अनुबंध पर 212 डॉक्टरों की नियुक्ति करने का फैसला किया है। इस कदम से अस्पतालों में विशेषज्ञ डॉक्टरों की कमी थोड़ी कम होगी लेकिन समस्या पूरी तरह खत्म नहीं होगी। डॉक्टरों की नियुक्ति के लिए वॉक-इन इंटरव्यू 9 अक्टूबर से शुरू होंगे।

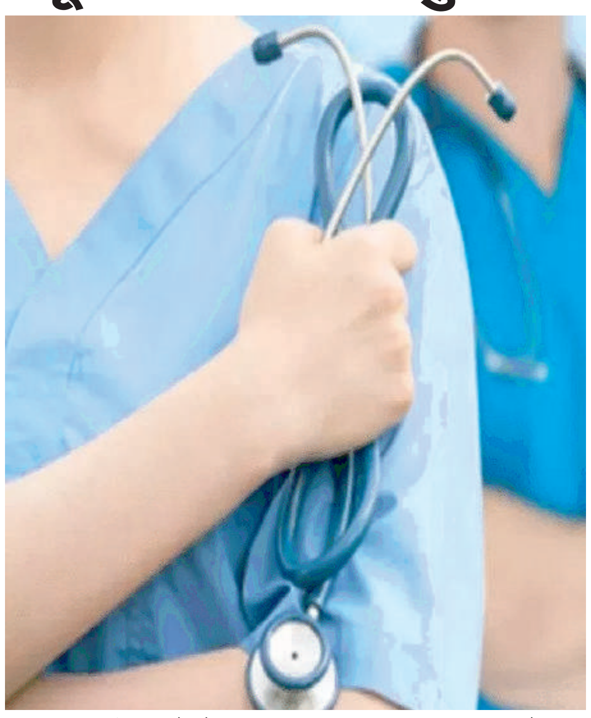

नई दिल्ली। हाईकोर्ट द्वारा गठित कमेटी की रिपोर्ट में दिल्ली सरकार के अस्पतालों में डॉक्टर्स की भारी कमी का मामला सामने आने और इस मामले को लेकर सियासी घमासान के बाद आखिरकार अब स्वास्थ्य विभाग ने अनुबंध पर डॉक्टर्स की नियुक्ति की पहल की है। इसके तहत विशेषज्ञ कैडर (गैर शैक्षणिक) के 212 डॉक्टर वॉक इन इंटरव्यू के आधार दिल्ली सरकार के विभिन्न अस्पतालों में जल्द नियुक्त किए जाएंगे। इससे अस्पतालों में विशेषज्ञ डॉक्टर्स की कमी थोड़ी कम होगी, लेकिन समस्या पूरी तरह खत्म नहीं होगी।

इस नियुक्ति प्रक्रिया के तहत दस विभागों के विशेषज्ञ डॉक्टर नियुक्त किए जाएंगे। जिसमें मेडिसिन, गायनी, सर्जरी, एनेस्थीसिया, पीडियाट्रिक, पैथोलॉजी, ऑर्थोपेडिक, रेडियोलॉजी, ईएनटी व नेत्र विज्ञान विभाग शामिल हैं। मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज (एमएएमसी) के डीन कार्यालय में नौ अक्टूबर से वॉक इन इंटरव्यू शुरू होगा।

कब किस विभाग के होंगे इंटरव्यू

शुरुआती दो दिन नौ और दस अक्टूबर को मेडिसिन, गायनी व सर्जरी विभाग में डॉक्टर्स की नियुक्ति के लिए इंटरव्यू होगा। इसके बाद 11 से 14 अक्टूबर तक एनेस्थीसिया, पीडियाट्रिक व पैथोलॉजी विभाग के लिए, 15-16 अक्टूबर को आर्थोपेडिक व रेडियोलॉजी विभाग के लिए और 18-19 अक्टूबर को ईएनटी व नेत्र विज्ञान विभाग के डॉक्टर्स की नियुक्ति के लिए इंटरव्यू होगा।

सुबह 9 बजे इंटरव्यू देने पहुंचें डॉक्टर

मेडिकल स्नातकोत्तर या एमबीबीएस के बाद पीजी डिप्लोमा करने वाले इच्छुक डॉक्टर निर्धारित तिथि को सुबह नौ बजे एमएएमसी के डीन कार्यालय में इंटरव्यू देने पहुंच सकते हैं। ये डॉक्टर एक वर्ष या स्थायी तौर पर विशेषज्ञ डॉक्टर्स की नियुक्ति होने तक अस्पतालों में सेवाएं दे सकेंगे।

सरकारी अस्पतालों में डॉक्टर्स की कमी

समिति की रिपोर्ट के अनुसार, दिल्ली सरकार के 38 अस्पतालों में विशेषज्ञ कैडर के डॉक्टर्स के 1700 पद हैं। जिसमें से 882 डॉक्टर अस्पतालों में नियुक्त हैं। शेष 818 (48.11 प्रतिशत) डॉक्टर्स की कमी है।

ऐसे में अनुबंध पर 212 विशेषज्ञ डॉक्टर्स की नियुक्ति होने के बाद भी 676 विशेषज्ञ डॉक्टर्स की कमी बनी रहेगी। जनरल ड्यूटी मेडिकल ऑफिसर (जीडीएमआ) स्तर के डॉक्टर्स के 741 सृजित पद हैं। जिसमें से 189 खाली है।

'हमारे बिना हरियाणा में नहीं बनेगी सरकार...'

गुरुग्राम में केजरीवाल ने उड़ाई कांग्रेस-BJP की नींद

परिवहन विशेष न्यूज

अरविंद केजरीवाल ने गुरुग्राम में एक जनसभा को संबोधित किया और हरियाणा में आम आदमी पार्टी की सरकार बनने पर कई बड़े वादे किए। उन्होंने कहा कि अगर उनकी पार्टी सत्ता में आती है तो हरियाणा में बिजली मुफ्त होगी स्कूल और अस्पताल बनाए जाएंगे इलाज मुफ्त होगा रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और महिलाओं के खाते में हर महीने एक-एक हजार रुपये भेजे जाएंगे।

गुरुग्राम। गुरुग्राम की बादशाहपुर विधानसभा क्षेत्र सीट से आम आदमी पार्टी के प्रत्याशी बीर सिंह की जनसभा में पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल पहुंचे। सेक्टर 9 के मैदान में हुई जनसभा में अरविंद केजरीवाल ने कहा कि मैं पांच महीने जेल में रहा हूं। मैं शुगर का मरीज हूं। जेल में 15 दिन इंसुलिन के इंजेक्शन बंद कर दिए। ये मेरी हिम्मत तोड़ना चाहते थे, लेकिन मैं हरियाणा का हूं और हरियाणा वाले कभी हिम्मत नहीं हारते।

उन्होंने कहा कि दिल्ली में 24 घंटे फ्री बिजली, नो पावर कट और जीरो बिल आते हैं। अगर हमारी सरकार बनती है तो हरियाणा में बिजली फ्री होगी। 22 राज्यों में भाजपा की सरकार है और बिजली महंगी है। हमारी दो राज्य में सरकार है और बिजली फ्री है। मेरा कसूर है कि मैंने दिल्ली के सरकारी स्कूल शानदार बना दिए। चार लाख बच्चों ने प्राइवेट स्कूल से सरकारी स्कूल में दाखिला लिया है। मोदी जी मेरे स्कूल बंद कराना चाहते थे, इसलिए मुझे जेल में डाल दिया।

दिल्ली में 12 लाख बच्चों को रोजगार दिया: केजरीवाल

उन्होंने कहा कि हमने दिल्ली में 12 लाख बच्चों को रोजगार दिया है। जैसे ही इनकी सरकार बनती है, जनता का पैसा लूटते हैं। मेरा कसूर है कि मैंने दिल्ली के सरकारी अस्पताल अच्छे बना दिए। मोदी जी को लगा कि अब यह हरियाणा में भी सरकार बना लेगा। मोहल्ला क्लिनिक बना दिए दिल्ली में। मोदी जी केजरीवाल को जेल में डालकर काम बंद करना चाहते है।

हरियाणा का बकाया बिजली बिल फ्री होगा: केजरीवाल

उन्होंने काह कि मेरा वादा है कि हरियाणा का बकाया बिजली बिल फ्री होंगे। स्कूल और अस्पताल बनाएंगे। इलाज मुफ्त होगा। रोजगार देंगे बिना रिश्वत के। महिलाओं के खाते में हर महीने एक-एक हजार रुपये भेजेंगे। जेल से तीन महीने पहले छोड़ देते तो हरियाणा में हमारी सरकार बनती। हरियाणा में कोई भी सरकार बनेगी, वह आम आदमी पार्टी के सहयोग के बिना नहीं बनेगी। जनसभा में आम आदमी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सुशील गुप्ता सहित आप के अन्य नेता भी मौजूद रहे।

गाजियाबाद में मतांतरण का एक सप्ताह में तीसरा मामला आया सामने, एक आरोपी गिरफ्तार; पादरी फरार

परिवहन विशेष न्यूज

गाजियाबाद में मतांतरण का खेल थमने का नाम नहीं ले रहा है। सेवा नगर और मोदीनगर में मतांतरण के बाद अब डूंडाहेड़ा में हिंदू समाज के लोगों को धन का प्रलोभन और बीमारी का इलाज कराने की बात कहकर ईसाई बनाया जा रहा था। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर पादरी के सहयोगी शांति नगर के पंकज को गिरफ्तार किया है।

गाजियाबाद। सेवा नगर और मोदीनगर में मतांतरण कर हिंदू समाज के लोगों को ईसाई बनाने के बाद अब एक सप्ताह में तीसरा मतांतरण का मामला सामने आया है। इस बाद डूंडाहेड़ा में हिंदू समाज के लोगों को धन का प्रलोभन और बीमारी का उपचार कराने की बात कहकर मतांतरण कर ईसाई बनाया जा रहा था।

एसीपी वेवसिटी लिपि नगायच ने बताया कि रविवार को क्रॉसिंग रिपब्लिक थाने में एक व्यक्ति ने तहरीर देकर बताया कि डूंडाहेड़ा में हिंदू समाज के लोगों का मतांतरण कराया जा रहा है। सूचना पर पुलिस ने मौके पर पहुंचकर पादरी राजू के सहयोगी शांति नगर के पंकज को गिरफ्तार किया गया है, जबकि पादरी फरार है।

पहले भी कई आरोपी हो चुके हैं गिरफ्तार

मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए इस मामले में आरोपियों के अन्य साथियों की तलाश की जा रही है। बता दें कि इससे पहले सेवा नगर से एक पादरी समेत पांच और मोदीनगर से चार आरोपियों को पुलिस गिरफ्तार कर चुकी है, ये गिरोह भी हिंदू समाज के लोगों का मतांतरण करा रहा था। पुलिस ने मामले की विस्तृत जांच के लिए दोनों मामलों में अलग-अलग एसआईटी गठित की है।

नोएडा में मोमोज खाने के बाद पूरे परिवार की बिगड़ी तबीयत, दो बच्चे ICU में; चार इमरजेंसी वार्ड में भर्ती

परिवहन विशेष न्यूज

ग्रेटर नोएडा के सेक्टर ओमीक्रोन तीन में एक ही परिवार के छह सदस्य मोमोज खाने के बाद बीमार हो गए। दो बच्चों की हालत गंभीर होने पर उन्हें आईसीयू में भर्ती कराया गया है जबकि अन्य चार सदस्यों को इमरजेंसी वार्ड में रखा गया है। डॉक्टरों का कहना है कि फूड प्वाइजनिंग से उनकी हालत बिगड़ी है। आरोपी दुकानदार को पकड़ लिया गया है।

ग्रेटर नोएडा। सेक्टर ओमीक्रोन तीन निवासी एक ही परिवार के दो बच्चों समेत छह सदस्यों की मोमोज खाने के बाद हालत बिगड़ गई। दोनों बच्चों को आईसीयू में जबकि अन्य को इमरजेंसी वार्ड में भर्ती कराया गया है। फिलहाल डॉक्टरों ने फूड प्वाइजनिंग से हालत बिगड़ने की आशंका जताई है। सभी का राजकीय आयुर्विज्ञान संस्थान (जिम्स) में इलाज चल रहा है।

रिश्तेदार भानु के मुताबिक, गौरव सिंह ने एल्डिको सोसायटी की बाजार से 27 सितंबर की शाम मोमोज पैक कराए थे। घर पहुंचने के बाद रात करीब आठ बजे छह स्वजन ने मोमोज खाए। इसके कुछ देर बाद ही उनकी तबीयत बिगड़ गई। इनमें से दो बच्चों की हालत गंभीर हो गई। इसके बाद पड़ोसियों की मदद से आनन-फानन बच्चों समेत अन्य को जिम्स में भर्ती कराया गया।

फूड प्वाइजनिंग से सभी की तबीयत बिगड़ी

यहां चार और छह वर्षीय दोनों बच्चों की हालत में सुधार नहीं होते देख डॉक्टरों की टीम ने आईसीयू में शिफ्ट कर दिया, जबकि अन्य सदस्यों को भी इमरजेंसी में भर्ती किया गया है। सभी का इलाज अभी जिम्स में ही चल रहा है। डाक्टरों का कहना है कि फूड प्वाइजनिंग से सभी की तबीयत बिगड़ी है। खाद्य सहायक आयुक्त सर्वेश मिश्रा ने बताया कि मौके पर टीम को भेजा गया है। मोमोज की ब्रिकी कर रहे युवक को पुलिस ने पकड़ लिया है। मोमोज की सैंपलिंग कराएंगे। अन्य स्थानों पर भी कार्रवाई की जाएगी।

लगभग और 15 लोगों के बीमार

एल्डिको सोसायटी स्थित बाजार से मोमोज खरीदकर खाने वाले करीब और 15 लोग बीमार हुए हैं। भानु ने बताया कि सभी जिम्स में दवा लेने के लिए पहुंचे हैं। उन्होंने जिला प्रशासन से मोमोज की दुकान से सैंपल लेने की मांग की है। इसके अलावा खराब मोमोज बेचने वालों पर कड़ी कार्रवाई की मांग की है।

दिल्ली मेरठ एक्सप्रेस-वे पर दर्दनाक हादसा, स्कूटी चालक सहित तीन की मौत

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली मेरठ एक्सप्रेस-वे पर रविवार को दर्दनाक हादसा हो गया। हादसे में स्कूटी चालक सहित तीन की मौत हो गई। तीनों प्रतिबंध के बावजूद डीएमई पर सुबह करीब सवा तीन बजे स्कूटी पर बैठकर दिल्ली से मेरठ की ओर जा रहे थे। इस दौरान हवाहवाई रेस्तरां के पास अज्ञात वाहन ने स्कूटी में टक्कर मार दी जिसमें तीनों युवकों की जान चली गई।

गाजियाबाद। दिल्ली मेरठ एक्सप्रेस-वे (डीएमई) पर रविवार तड़के दर्दनाक हादसा हो गया। हादसे में स्कूटी चालक सहित तीन की मौत हो गई। तीनों एक ही स्कूटी पर सवार थे। प्रतिबंध के बावजूद डीएमई पर वे सुबह करीब सवा तीन बजे स्कूटी पर बैठकर दिल्ली से मेरठ की ओर जा रहे थे।

पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक, दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेस वे पर दिल्ली से मेरठ जाने वाले लेन पर हवाहवाई रेस्तरां के पास एक स्कूटी में अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। हादसे में स्कूटी सवार तीन युवक की मौत हो गई।

मृतकों की पहचान दिल्ली के त्रिलोकपुरी बी-32/414 में रहने वाले बिट्टू उर्फ विकास, त्रिलोकपुरी के ही अंशु उर्फ मनमोहन पुत्र प्रदीप सिंह और व दिल्ली के न्यू अशोक नगर स्थित डी-161 के विपिन भट्ट के रूप में हुई है। तीनों के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।

रोडरेज में दो पक्षों में मारपीट, जमकर चले लात-घूंसे व डंडे

उधर, मसूरी थानाक्षेत्र स्थित एनएच-9 पर रोडरेज में दो पक्षों के बीच जमकर मारपीट हुई। दोनों पक्षों की तरफ से जमकर लात-घूंसे व डंडे चले। झगड़े में दोनों पक्षों के छह लोग घालय हुए। इस दौरान एनएच-9 पर जाम लग गया। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने दोनों पक्ष के छह लोगों को गिरफ्तार किया।

एसीपी मसूरी सिद्धार्थ गौतम ने बताया कि शुक्रवार दोपहर दो बजे एनएच-9 स्थित शमीम होटल के सामने दो पक्षों में रोडरेज की घटना के बाद झगड़ा होने की सूचना मिली। मौके से एक पक्ष के नौशाद, अफजाल, दूसरे पक्ष के सद्दाम, जिशान, आमिर व मुजमिल को गिरफ्तार कर किया गया।

दरअसल, सर्विस रोड पर मसूरी निवासी नौशाद, अफजाल व अन्य अपनी गाड़ी से गलत दिशा से जा रहे थे जब वे शमीम होटल के सामने पहुंचे तो वहां खड़े सद्दाम की गाड़ी से टच हो गई। सद्दाम और उसके भाई आमिर, जिशान व मुजम्मिल कार चालक गाली-गलौज करने लगे जब इन्होंने गाली-गलौच करने का विरोध किया तो उन्होंने मारपीट शुरू कर दी। मामले में दोनों पक्षों छह नामजद व पांच अज्ञात आरोपितों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है।

रैगिंग से छात्रों को मुक्ति कब ?

डा. वरिंदर भाटिया

इस तरह के दस्तावेज में किसी भी लिखित कदाचार का उल्लेख किया जाएगा और कॉलेज, आवेदक पर नजर रख सकता है। यह दस्तावेज आवेदन पत्र के साथ नत्थी होना चाहिए। हॉस्टल वार्डनों, छात्रों, अभिभावकों आदि के प्रतिनिधियों के साथ रैगिंग रोकने के उपायों और कदमों पर चर्चा करें। इस समय रैगिंग से जुड़ी विकराल घटनाओं के लिए कॉलेज और विश्वविद्यालय प्रशासन बुनियादी तौर पर निकम्मे प्रशासनिक प्रबंध के कारण जिम्मेवार कहे जा सकते हैं, जो छात्रों को नैतिक शिक्षा नहीं दे पा रहे हैं'

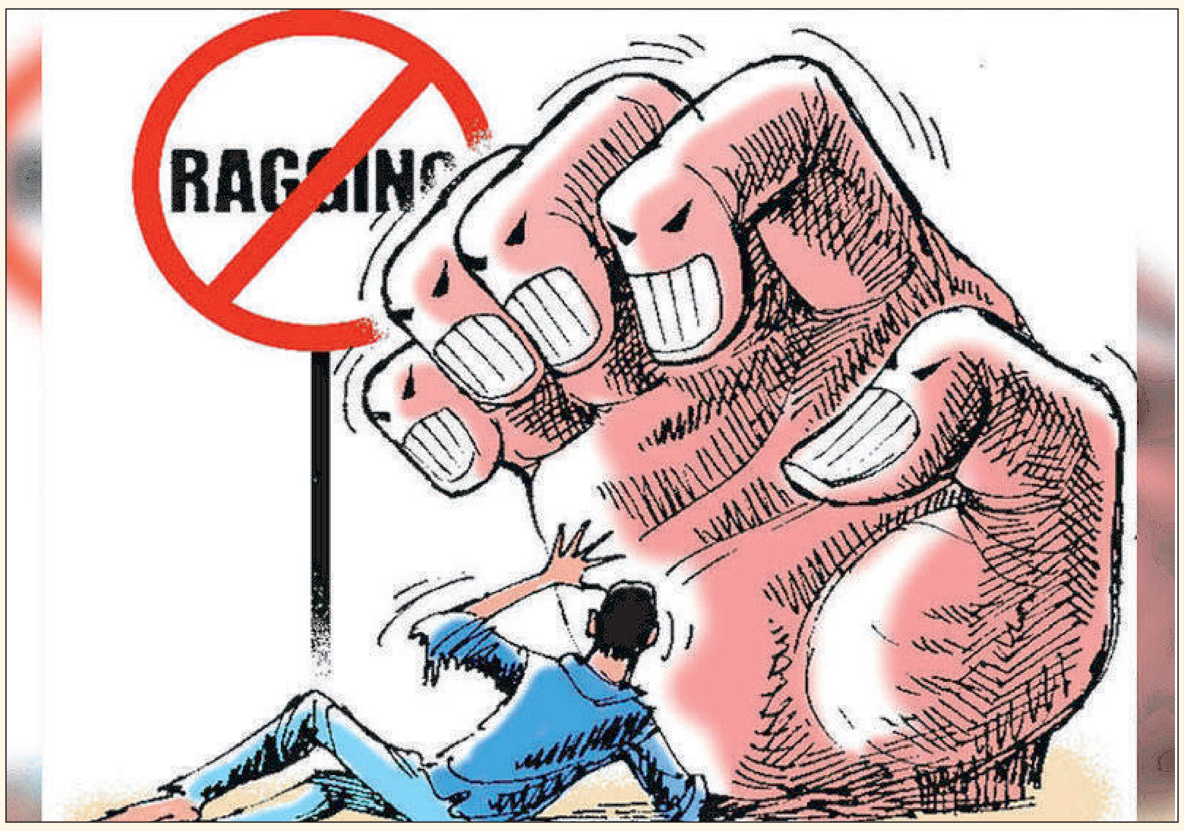

कुछ रोज पहले हिमाचल प्रदेश की एक निजी यूनिवर्सिटी में नए छात्रों की रैगिंग का मामला सामने आया। मीडिया रिपोर्ट बताती है कि रैगिंग से पीड़ित छात्र ने पुलिस को बताया कि आरोपियों ने उसे कमरे में बुलाया और फिर शराब पीने के लिए कहा, लेकिन उसने मना कर दिया। बाद में आरोपियों ने कमरा बंद कर सुबह तक उसके साथ मारपीट की। मामले पर तुरंत कार्रवाई करते हुए वहां की सरकार ने शिक्षा सचिव को इसकी जांच के भी आदेश दिए हैं और जल्द रिपोर्ट देने को कहा है। रैगिंग की समस्या उच्च शिक्षा जगत से जुड़ी अत्यंत संवेदनशील, सामाजिक समस्या है, जिससे उच्च शिक्षा जगत को पूर्ण रूप से मुक्ति नहीं मिल पाई है। इस समय देश के उच्च शिक्षा संस्थानों में रैगिंग पर प्रतिबंध है। इसके बावजूद देश के अनेक उच्च शिक्षा संस्थान इससे मुक्त नहीं हो पाए हैं। आइए, छात्रों की शिक्षा संस्थानों में रैगिंग को लेकर कुछ खास बातों को जानें। एक शिक्षण संस्थान के किसी अन्य छात्र के खिलाफ एक छात्र द्वारा किए गए किसी भी शारीरिक, मौखिक या मानसिक दुव्र्यवहार को रैगिंग कहते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कौनसा छात्र इसे करता है या किस छात्र के साथ यह दुव्र्यवहार किया जाता है। रैगिंग एक ऐसा शब्द है जो हर साल कॉलेज और यूनिवर्सिटी में क्लास शुरू होते ही सुनाई देने लगता है। दुनियाभर में हर साल लाखों स्टूडेंट्स को इसका सामना करना पड़ता है। रैगिंग को दुनिया में अलग-अलग नामों से पहचाना जाता है। इसको हेजिंग, फेगिंग, बुलिंग, प्लेजिंग और हॉर्स प्लेइंग के नामों से भी जाना जाता है। रैगिंग कई कारणों से हो सकती है, जैसे आपकी त्वचा, नस्ल, धर्म, जाति, प्रजातीयता, जेंडर, यौनिक रुझान, रूप-रंग, राष्ट्रीयता, क्षेत्रीय मूल, आपकी बोली, जन्म स्थान, गृह स्थान या आर्थिक पृष्ठभूमि के कारण इसमें शामिल हैं।

रैगिंग कई अलग-अलग रूप ले सकती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई छात्र किसी अन्य छात्र को उसके काम करने के लिए धौंस दिखाता है या किसी छात्र को कॉलेज समारोह जैसी परिसर की गतिविधियों से बाहर रखा जाता है, तो उसे रैगिंग माना जाता है। मानसिक चोट, शारीरिक दुव्र्यवहार, भेदभाव, शैक्षणिक गतिविधि में व्यवधान आदि सहित छात्रों के खिलाफ रैगिंग के विभिन्न रूपों को कानून दंडित करता है। जहां तक रैगिंग के शुरू होने से जुड़े इतिहास का संबंध है, तो माना जाता है कि 7 से 8वीं शताब्दी में ग्रीस के खेल समुदायों में नए खिलाडियों में स्पोट्र्स स्प्रिट जगाने के उद्देश्य से रैगिंग की शुरुआत हुई। इसमें जूनियर खिलाडियों को चिढ़ाया और अपमानित किया जाता था। यह कार्य समय के साथ-साथ बढ़ता गया और रैगिंग में बदलता गया। इसके बाद सेना में भी इसको अपनाया गया। खेल और सेना के बाद रैगिंग से शिक्षण संस्थान भी नहीं बचे और छात्रों ने इसको अपनाकर भयावह रूप दे दिया। धीरे-धीरे कॉलेजों में शैक्षणिक क्षेत्र में जगह बनाने के बाद रैगिंग हिंसक हो गई और इसके लिए बाकायदा ग्रुप बन गए। 18वीं शताब्दी के दौरान विश्वविद्यालयों में छात्र संगठन बनने लगे जिनमें विशेष रूप से यूरोपीय देश शामिल थे। इन संगठनों के नाम अल्फा, बीटा, कपा, एपिसिलोन, डेल्टा आदि जैसे ग्रीक अक्षरों के नाम पर रखे जाने लगे। भारत में रैगिंग की शुरुआत आजादी से पहले ही हो गई थी। इसकी शुरुआत अंग्रेजी मीडियम की शिक्षा से हुई। हालांकि भारत में रैगिंग का अलग तरीका था जिसमें सीनियर और जूनियर के बीच दोस्ती बढ़ाने के लिए हल्की-फुल्की रैगिंग की जाती थी। इसमें शालीनता का परिचय दिया जाता था। लेकिन 90 के दशक में भारत में रैगिंग ने विकराल रूप ले लिया। इसके बाद 2001 में सुप्रीम कोर्ट ने पूरे भारत में रैगिंग पर प्रतिबंध लगा दिया। इसके साथ ही यूजीसी ने भी रैगिंग के खिलाफ सख्त नियम बनाए हैं। रैगिंग पर कुछ शिक्षण संस्थानों के अपने नियम हैं। उदाहरण के लिए, ऑल इंडिया काउंसिल फॉर टेक्निकल एजुकेशन के पास रैगिंग पर दिशा-निर्देशों की अपनी एक नियमावली है। कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में रैगिंग को प्रतिबंधित करने व रोकने के लिहाज से विभिन्न राज्यों ने कानून पारित किए हैं, जो केवल उन संबंधित राज्यों में ही लागू होते हैं। क्या सभी राज्यों मे सरकारों ने ऐसे कानून बनाए हैं? यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन (यूजीसी) ने 16 महीनों में रैगिंग की 90 फीसदी शिकायतों के निपटारे का दावा किया है।

यूजीसी के मुताबिक, एक जनवरी 2023 से 28 अप्रैल 2024 तक अलग-अलग यूनिवर्सिटी और उच्च शिक्षा संस्थानों से छात्रों की 1240 शिकायतें मिली हैं, जिनमें से 1113 (89.76 फीसदी) का निपटारा किया गया है। शिकायतों का निपटारा सिर्फ काफी नहीं होगा, कसूरवारों को सख्त सजा ज्यादा जरूरी होनी चाहिए। देश के सभी राज्यों में रैगिंग को लाकर जीरो टोलरेंस की नीति पर काम करना चाहिए। सभी कॉलेजों और विश्वविद्यालयों को, छात्रों के प्रवेश के समय रैगिंग रोकने के उपाय करने चाहिए। इनमें से कुछ हैं : एक सार्वजनिक घोषणा (किसी भी प्रारूप में- प्रिंट, ऑडियो, विजुअल आदि) करें कि कॉलेज में रैगिंग पूरी तरह से निषिद्ध है, और जो कोई भी छात्रों की रैगिंग करता पाया जाएगा, उसे कानून के तहत दंडित किया जाएगा। प्रवेश की विवरणिका में रैगिंग के बारे में जानकारी दें। उच्च शिक्षा संस्थानों में रैगिंग के खतरे को रोकने के लिए यूजीसी विनियमनों 2009 (यूजीसी गाइडलाइंस) को मुद्रित किया जाना चाहिए। साथ ही सभी महत्वपूर्ण पदाधिकारियों, जैसे कि प्रमुख, हॉस्टल वार्डन, आदि की जानकारी, साथ ही एंटी-रैगिंग हेल्पलाइन का नंबर भी छपना चाहिए। आवेदन पत्र के साथ एक शपथ पत्र प्रदान करें। छात्रों और अभिभावकों के लिए ये हलफनामे में लिखा होना चाहिए कि छात्र और माता-पिता ने यूजीसी के दिशानिर्देशों को पढ़ा और समझा है, वे जानते हैं कि रैगिंग निषिद्ध है और आवेदक किसी भी तरह की रैगिंग में शामिल नहीं होगा, और ऐसे किसी भी व्यवहार में लिप्त पाए जाने पर वह सजा के लिए उत्तरदायी होगा या होगी।

छात्रावास के लिए आवेदन करने पर आवेदक को अतिरिक्त शपथ पत्रों पर हस्ताक्षर करने होंगे। एक दस्तावेज प्रदान करें जो आवेदक के सामाजिक व्यवहार पर रिपोर्ट करता है। इस तरह के दस्तावेज में किसी भी लिखित कदाचार का उल्लेख किया जाएगा और कॉलेज, आवेदक पर नजर रख सकता है। यह दस्तावेज आवेदन पत्र के साथ नत्थी होना चाहिए। हॉस्टल वार्डनों, छात्रों, अभिभावकों आदि के प्रतिनिधियों के साथ रैगिंग रोकने के उपायों और कदमों पर चर्चा करें। इस समय रैगिंग से जुड़ी विकराल घटनाओं के लिए कॉलेज और विश्वविद्यालय प्रशासन बुनियादी तौर पर निकम्मे प्रशासनिक प्रबंध के कारण जिम्मेवार कहे जा सकते हैं, जो सीनियर छात्रों को नैतिक मूल्य और शिक्षा नहीं दे पा रहे हैं। क्यों न हम उन मां-बाप की चिंता के बारे में भी सोचें जो घर से दूर अपने बच्चों को छात्रावासों में पढने के लिए भेजते हैं, और उनके बच्चे मानसिक और शारीरिक शोषण का शिकार होने से बच नहीं पाते। हमें हर हालत में रैगिंग के मामले में जिम्मेवारी तय करनी होगी और छात्रों की कैम्पस सुरक्षा यकीनी बनानी होगी।

- :सौजन्य :-
ईवी ड्राइव द फ्यूचर
EV
Drive the Future

प्रधानमंत्री ने 500 नए इलेक्ट्रिक व्हीकल चार्जिंग स्टेशन का शुभारंभ कर किया देश को समर्पित

परिवहन विशेष न्यूज

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज 29 सितंबर, रविवार को महाराष्ट्र राज्य के पुणे शहर में मेट्रो रेल परियोजना के पहले चरण का उद्घाटन किया। इसके साथ ही प्रधानमंत्री ने हरित ऊर्जा के क्षेत्र में ईवी चार्जिंग स्टेशन और एलएनजी स्टेशनों का भी शुभारंभ किया। भारत सरकार ने पुणे में पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस क्षेत्र में करोड़ों रुपये की योजनाओं का शुभारंभ किया।

पीएम मोदी ने देश में 500 नए ईवी चार्जिंग स्टेशनों का उद्घाटन किया है। भारत सरकार ने साल 2025 तक 10 हज़ार ईवी चार्जिंग स्टेशन स्थापित करने का लक्ष्य रखा है, जिसके लिए 1500 करोड़ रुपये रखे गए हैं। इसके साथ ही पीएम ने देश में 20 तरलीकृत प्राकृतिक गैस (LNG) स्टेशनों का भी उद्घाटन किया है, जिनमें से तीन महाराष्ट्र में स्थापित किए गए हैं।

दिल्ली की ई-वाहन नीति का 2025 तक होगा विस्तार

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली सरकार ईवी नीति को मार्च 2025 तक बढ़ाने जा रही है। दिल्ली के परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत ने अपने विभाग को पुरानी वाहन नीति के विस्तार के संबंध में कैबिनेट मंजूरी के लिए प्रस्ताव तैयार करने का निर्देश दिया है। इसके बाद बीते करीब छह महीने से ई-वाहन नीति के तहत ई-वाहन खरीद पर बंद पड़ी दिल्ली सरकार की सब्सिडी और रोड टैक्स में छूट जैसी अन्य सुविधाओं का इंतजार खत्म हो जाएगा। परिवहन मंत्री ने बताया कि ईवी नीति 2.0 पर काम शुरू हो गया है। मसौदा अंतिम चरण में है, लेकिन अभी इसमें दो-तीन महीने का समय लगेगा। परिवहन विभाग के प्रमुख सचिव को नई वाहन नीति को बनाने में तेजी लाने के निर्देश दिए गए हैं। जब तक यह तैयार नहीं हो जाती है तब तक नीति के तहत मिल रही सब्सिडी को जारी रखने का फैसला लिया गया है। विभाग मौजूदा नीति के विस्तार के लिए एक प्रस्ताव लेकर आएगा।

दिल्ली में अगस्त 2020 में ई-वाहन नीति को लागू किया गया था। उस समय ई-वाहनों की

खरीद पर सब्सिडी के साथ रोड टैक्स में छूट

की घोषणा की गई थी। वह नीति तीन अगस्त 2023 तक के लिए लागू की गई थी। इसके बाद ई-वाहन नीति 2.0 लानी थी, लेकिन वह तैयार नहीं हो सकी, जिसके चलते पुरानी वाहन नीति को ही विस्तार दिया जाना था।

छह महीने से लोकसभा चुनाव, कैबिनेट की मंजूरी लंबित होने के कारण नीति को मंजूरी नहीं मिल सकी। अब फिर से पुरानी ई-वाहन नीति को मार्च 2025 तक विस्तार दिया जा रहा है, ताकि जिन लोगों ने पिछले छह महीनों में सब्सिडी के लिए आवेदन कर रखे हैं, उन्हें सब्सिडी राशि और लाभ प्राप्त हो सकें।

ई-रिक्शा डीलर वेलफेयर एसोसिएशन के पदाधिकारियों संग अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मंडल एआरटीओ से मिला

परिवहन विशेष न्यूज

अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मंडल के राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप बंसल ने लखनऊ ई-रिक्शा डीलर वेलफेयर एसोसिएशन के पदाधिकारियों के साथ राजधानी लखनऊ के संभागीय परिवहन अधिकारी संजय कुमार तिवारी से मुलाकात की। इस मुलाकात में ई-रिक्शा के संचालन के लिए आचार संहिता लागू करने की मांग की गई। साथ ही अतिक्रमण की समस्या के समाधान और इस व्यवसाय से जुड़े लाखों लोगों को रोजगार सुनिश्चित करने के मुद्दे पर भी चर्चा की।

बैठक में निर्णय लिया गया कि ई-रिक्शा का वित्त पोषण केवल भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा अधिसूचित अधिकृत वित्तपोषकों के माध्यम से ही किया जाएगा। इस पर सभी डीलरों ने सहमति जताई। इसके अलावा जो ई-रिक्शा पंजीकृत नहीं

हैं और अवैध रूप से चलाए जा रहे हैं, उनका संचालन बंद किया जाएगा।

एक अहम फैसले में ई-रिक्शा खरीदने वाले से 100 रुपए के स्टांप पेपर पर अनुबंध कराने का फैसला किया गया। इसमें साफ तौर पर लिखा होगा कि चालक अनुशासित तरीके से ई-रिक्शा चलाएंगे। नाबालिगों को चलाने की इजाजत नहीं होगी। उल्लंघन की स्थिति में ई-रिक्शा जब्त कर लिया जाएगा। इस स्टांप पेपर की एक कॉपी आरटीओ विभाग, डीलर और ग्राहक को दी जाएगी।

संदीप बंसल ने ई-रिक्शा की आयु निर्धारण के मुद्दे पर संभागीय परिवहन अधिकारी से चर्चा की। उन्होंने बताया कि यह उनके अधीन नहीं है तथा भारत सरकार के निर्देशों का पालन करना आवश्यक है। इस पर बंसल ने कहा कि वे उत्तर प्रदेश के परिवहन मंत्री से बात करेंगे।

बैठक में अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मंडल के महानगर अध्यक्ष सुरेश छबलानी, महामंत्री अनुज गौतम, उपाध्यक्ष अरविंद मित्तल, ई-रिक्शा डीलर वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष ऋषि गुप्ता, महामंत्री अंकित जैन, उपाध्यक्ष सिमरनजीत सिंह चड्ढा, शिवम गर्ग, अर्पित तलवार सहित अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे।

टाटा मोटर्स की जेएलआर ने रीसाइक्लिंग ईवी बैटरियों के परीक्षण के लिए साझेदारी की

परिवहन विशेष न्यूज

टाटा मोटर्स की सहायक कंपनी जगुआर लैंड रोवर (जेएलआर) ब्रिटिश रीसाइक्लिंग फर्म एल्टीलियम के साथ मिलकर एक पायलट प्रोजेक्ट पर काम कर रही है, जिसके तहत रीसाइकिल की गई सामग्रियों से इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) बैटरियां बनाई जाएंगी और उनका परीक्षण किया जाएगा। इस पहल का उद्देश्य पुरानी ईवी से प्राप्त सामग्रियों का उपयोग करके बैटरी सेल के बड़े पैमाने पर उत्पादन की व्यवहार्यता को साबित करना है।

यू.के. के एडवांस्ड प्रोपल्शन सेंटर द्वारा समर्थित यह एक साल लंबी परियोजना लिथियम, कोबाल्ट और निकल जैसी महत्वपूर्ण सामग्रियों के पुनर्चक्रण पर केंद्रित है। एल्टीलियम का दावा है कि इसकी पुनर्चक्रण प्रक्रिया नए खनन की आवश्यकता को कम कर सकती है और कार्बन उत्सर्जन में 60% की कटौती कर सकती है।

जेएलआर अपनी बैटरी परीक्षण सुविधाओं में इन पुनर्चक्रित सामग्रियों से निर्मित पाउच सेल का परीक्षण और सत्यापन करेगा। बैटरी का उत्पादन यूके बैटरी औद्योगिकीकरण केंद्र (यूकेबीआईसी) में किया जाएगा, जिसमें डेवन में अल्टीलियम की नई एसीटी2 सुविधा में प्राप्त सामग्रियों का उपयोग किया जाएगा।

यह परियोजना जेएलआर की व्यापक इलेक्ट्रिक वाहन रणनीति के अनुरूप है। इस महीने की शुरुआत में, कंपनी ने वैश्विक बाजारों के लिए भारत में इलेक्ट्रिक वाहन बनाने की योजना का खुलासा किया, जिससे उसकी ईवी उत्पादन क्षमताओं को बढ़ाने के प्रयास जारी रहे। इसके अतिरिक्त, जेएलआर ने अपनी यूके सुविधा को इलेक्ट्रिक एसयूवी के निर्माण के लिए केंद्र में बदलने के लिए ₹5,586 करोड़ के निवेश के लिए प्रतिबद्धता जताई, जो कंपनी की पहली ऑल-इलेक्ट्रिक उत्पादन इकाई है।

एल्टीलियम के साथ सहयोग ऑटोमोटिव उद्योग में स्थिरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जिससे नई खनन सामग्री पर निर्भरता कम होगी और उत्सर्जन में कटौती होगी। यह परियोजना नवाचार और पर्यावरणीय जिम्मेदारी के प्रति जेएलआर की प्रतिबद्धता को भी रेखांकित करती है, जो ईवी क्षेत्र में भविष्य के विकास का मार्ग प्रशस्त करती है।

टाटा इलेक्ट्रिक कारों की कीमत में 3 लाख तक की कमी

परिवहन विशेष न्यूज

टाटा पैसेंजर इलेक्ट्रिक मोबिलिटी लिमिटेड ने स्पेशल फेस्टिव ऑफर के तहत अपनी इलेक्ट्रिक कारों की कीमत में तीन लाख रुपए तक की कटौती की है। यह छूट 31 अक्टूबर तक ही मिलेगी। ऑफर के तहत नेक्सॉन ईवी की कीमत में 3 लाख और पंच ईवी की कीमत में 1.20 लाख रुपए तक की कमी की गई है। कंपनी के चीफ कमर्शियल ऑफिसर विवेक श्रीवत्स ने कहा कि हाल ही लॉन्च कर्व ईवी की कीमत अब पेट्रोल-डीजल गाड़ियों के बराबर हो गई है। टाटा पावर के चार्जिंग पॉइंट पर ग्राहक अपनी कार को छह महीने तक मुफ्त चार्ज कर सकेंगे।

4.99 लाख रुपये में MG दे रही Comet EV, क्या यह स्कीम आपके लिए होगी फायदेमंद? पढ़ें पूरी खबर

परिवहन विशेष न्यूज

ब्रिटिश वाहन निर्माता MG Motors की ओर से भारतीय बाजार में कई इलेक्ट्रिक कारों और एसयूवी को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। कंपनी की ओर से कुछ समय पहले ही BaaS स्कीम को शुरू किया है। जिसमें MG Comet EV को सिर्फ 4.99 लाख रुपये की कीमत पर घर लाया जा सकता है। क्या यह स्कीम आपके लिए फायदेमंद साबित होगी या नहीं। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। ब्रिटिश वाहन निर्माता MG Motors की ओर से कुछ समय पहले ही MG Battery as a service सुविधा को शुरू किया गया है। जिसके बाद MG Comet EV को सिर्फ 4.99 लाख रुपये में खरीदा जा सकता है। क्या इस स्कीम में कॉमेट को खरीदना आपके लिए फायदेमंद होगा या नहीं। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

क्या है ऑफर

एमजी की ओर से कुछ समय पहले ही MG Battery as a service स्कीम को लॉन्च किया गया है। इस स्कीम में कंपनी सिर्फ 4.99 लाख रुपये की कीमत पर MG Comet EV को दे रही है। लेकिन BaaS स्कीम में गाड़ी लेने पर आपको हर किलोमीटर के 2.5 रुपये का भुगतान करना होगा। इसके अलावा गाड़ी की चार्जिंग पर होने वाला खर्च अलग से होगा।

एक लाख किलोमीटर चलाने पर कितना होगा खर्च

BaaS स्कीम में गाड़ी खरीदने के बाद अगर एक लाख किलोमीटर चलाया जाता है तो कंपनी को 2.5 लाख रुपये का भुगतान करना होगा। वहीं गाड़ी को चलाने में औसतन एक रुपये प्रति किलोमीटर का खर्च आएगा। एक लाख किलोमीटर गाड़ी चलाने के लिए चार्जिंग में भी एक लाख रुपये खर्च होंगे। गाड़ी को चलाने का कुल खर्च 3.5 लाख रुपये हो जाएगा।

इस तरह करें कैलकुलेशन

गाड़ी की कीमत 4.99 लाख रुपये होगी और एक लाख किलोमीटर चलाने पर 3.5 लाख रुपये खर्च हो जाएंगे। ऐसे में किसी भी व्यक्ति को BaaS स्कीम के तहत गाड़ी लेने पर कुल खर्च 8.50 लाख रुपये होगा। वहीं कंपनी इस स्कीम में बाय बैक का

विकल्प भी दे रही है। तीन साल पूरे होने पर अगर गाड़ी को वापस किया जाता है तो कंपनी 60 फीसदी पैसा वापस करेगी। ऐसे में पांच लाख रुपये की कीमत वाली कॉमेट को तीन साल में वापस करने पर आपको तीन लाख रुपये मिल जाएंगे।

कुल कितना होगा खर्चा

पांच लाख रुपये में गाड़ी खरीदने के बाद एक लाख किलोमीटर चलाने के बाद कुल खर्च 8.50 लाख रुपये होगा और तीन साल में गाड़ी वापस करने पर 60 फीसदी कीमत वापस मिलेगी जो तीन लाख रुपये होगी। ऐसे में तीन साल तक एक लाख किलोमीटर MG Comet EV को BaaS स्कीम में चलाने पर कुल खर्च 5.50 लाख रुपये होगा। ऐसे में प्रति किलोमीटर का खर्च निकाला जाए तो यह 5.50 रुपये होता है।

निसान मैगनाइट फेसलिफ्ट के लिए शुरू हुई बुकिंग, चार अक्टूबर को भारतीय बाजार में होगी लॉन्च

जापानी वाहन निर्माता Nissan की ओर से भारतीय बाजार में बजट सेगमेंट एसयूवी के तौर पर Magnite को ऑफर किया जाता है। कंपनी इस एसयूवी के Facelift वर्जन को लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। लॉन्च से पहले इसके लिए बुकिंग शुरू कर दी गई है। किस तरह से और कितनी कीमत में बुकिंग करवाई जा सकती है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। जापानी वाहन निर्माता Nissan की ओर से एंट्री लेवल एसयूवी सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Magnite के Facelift वर्जन को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। लॉन्च से पहले एसयूवी के लिए बुकिंग को शुरू कर दिया गया है। कितने रुपये में इसकी बुकिंग करवाई जा सकती है। लॉन्च के समय संभावित कीमत क्या हो सकती है। किस तरह के फीचर्स के साथ इसे लाया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

शुरू हुई बुकिंग

निसान की ओर से मैग्नाइट एसयूवी के फेसलिफ्ट वर्जन के लिए बुकिंग को शुरू कर दिया गया है। डीलरशिप पर ऑफलाइन और वेबसाइट पर ऑनलाइन इसके लिए बुकिंग करवाई जा सकती है। एडवांस बुकिंग के लिए 11 हजार रुपये देने होंगे।

रिपोर्ट्स से मिली जानकारी : कंपनी की ओर से अभी आधिकारिक जानकारी नहीं दी गई है लेकिन मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक मौजूदा एसयूवी Nissan Magnite के फेसलिफ्ट वर्जन में ज्यादातर कॉस्मैटिक बदलाव ही किए जाएंगे। इसके इंजन में किसी तरह के बदलाव की उम्मीद कम है।

क्या होंगे बदलाव : जानकारी के मुताबिक इसके इंजन में किसी भी तरह के बदलाव की संभावना कम है। इसके फ्रंट बंपर, हेडलाइट्स और टेल लाइट्स के साथ ही ग्रिल में बदलाव किया जाएगा और रियर में भी बंपर और अलॉय व्हील्स में भी बदलाव करने के बाद इसे नयापन देने की कोशिश की जा सकती है। इंटीरियर में भी बदलाव किए जा सकते हैं।

वैश्विक ईवी बाज़ार एक दशक में 2 ट्रिलियन डॉलर तक

परिवहन विशेष न्यूज

एक्सिस सिक्योरिटीज की रिपोर्ट के अनुसार वैश्विक इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) बाजार, जिसका वर्तमान मूल्य 2023 में 255 बिलियन अमेरिकी डॉलर है, 2033 तक 2,108 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँचने के लिए उल्लेखनीय वृद्धि के लिए तैयार है। 23% की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) के साथ, यह उछाल दुनिया भर में स्वच्छ और टिकाऊ परिवहन की बढ़ती मांग को दर्शाता है।

भारत इस ईवी क्रांति में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए तैयार है। देश का ईवी बाजार 2033 तक सालाना 10 मिलियन यूनिट तक पहुंचने की उम्मीद है, जो वित्त वर्ष 24 में 1.7 मिलियन यूनिट से काफी अधिक है। इस परिवर्तन को आगे बढ़ाने वाले प्रमुख कारकों में सहायक सरकारी नीतियां, नए उत्पाद पेश करना और सामग्री के बिल (बीओएम) की घटती लागत शामिल हैं।

भारत सरकार ने इलेक्ट्रिक वाहनों को अपनाने को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण संसाधन समर्पित किए हैं, जिसमें अगले दो वर्षों में इलेक्ट्रिक दोपहिया, तिपहिया और बसों के लिए 10,900 करोड़ रुपये की सब्सिडी शामिल है। यह फंडिंग 24.79 लाख ई-दोपहिया, 3.16 लाख ई-तिपहिया और 14,028 ई-बसों की बिक्री का समर्थन करती है। इसके अतिरिक्त, सरकार ने आपातकालीन सेवाओं को आधुनिक बनाने के लिए इलेक्ट्रिक ट्रकों के लिए 500 करोड़ रुपये और ई-एम्बुलेंस के लिए 500 करोड़ रुपये निर्धारित किए हैं।

चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास एक और मुख्य फोकस है। सरकार ने पूरे भारत में सार्वजनिक चार्जिंग स्टेशन स्थापित करने के लिए 2,000 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं, जिसमें इलेक्ट्रिक कारों के लिए 22,100 फास्ट चार्जर और दोपहिया और तिपहिया वाहनों के लिए 48,400 चार्जर शामिल होंगे।

सरकार का सामर्थ्य के प्रति जोर कर संरचना में स्पष्ट है, जहां इलेक्ट्रिक वाहनों पर सिर्फ 5% कर लगाया गया है, जबकि हाइब्रिड पर 28% और आंतरिक दहन इंजन (आईसीई) वाहनों पर 49% कर लगाया गया है, जिससे ईवी एक आकर्षक विकल्प बन गया है।

ग्रामीण भारत की सूरत बदलती कृषि

विजय गर्ग

सरकार कृषि क्षेत्र में उद्यमशीलता को बढ़ावा दे रही हैं, ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि आधारित उद्योग-धंधों का विकास हो। इसी को देखते हुए कृषि आधारभूत ढांचा फंड का विस्तार किया गया है। गत दिनों इसके तहत सात योजनाओं के लिए 14, 200 करोड़ रुपये जारी किए गए। इसमें डिजिटल कृषि मिशन के लिए 2,817 करोड़ रुपये, फसल विज्ञान पर 3,979 करोड़ रुपये, कृषि शिक्षा एवं प्रबंधन को बेहतर करने के लिए 2,291 करोड़ रुपये और पशु स्वास्थ्य के लिए 1,702 करोड़ रुपये मुख्य हैं।

तीसरे कार्यकाल में मोदी सरकार की स्थिरता पर संदेह प्रकट करने वालों को निराशा हाथ लगी है। पहले सौ दिनों में ही सरकार ने 15 लाख करोड़ रुपये से अधिक की योजनाओं को मंजूरी दी। सरकार का पूरा जोर सरकारी कामकाज के तरीके में बड़े सुधार और गुड गवर्नेस को जमीनी स्तर तक ले जाने पर है। इसके लिए वह भूमि रिकार्ड से लेकर सरकारी कामकाज के डिजिटलीकरण पर फोकस कर रही है, ताकि योजनाओं का लाभ आम आदमी तक पहुंचे। इसीलिए सरकारी योजनाओं की रूपरेखा तय करने, योजनाओं के क्रियान्वयन की प्रक्रिया के डिजिटलीकरण के साथ-साथ उसकी मानिटरिंग और नौकरशाही की जवाबदेही तय करने के लिए नए मानक निर्धारित किए गए हैं। सरकार के तीसरे कार्यकाल की जो उपलब्धियां आज दिख रही हैं, उसकी कवायद लोकसभा चुनाव घोषित होने के पहले से ही शुरू कर दी थी। इस साल फरवरी में प्रधानमंत्री मोदी ने मंत्रियों से कहा था कि वह अगले पांच साल का रोडमैप और सौ दिनों का एक्शन प्लान बनाएं। एक्शन प्लान लागू करने के लिए सचिवों की दस समितियां बनाई गईं। सभी मंत्रालयों से रिपोर्ट मांगी गई। राज्य सरकारों से भी सलाह ली गई। कारोबारियों, सिविल सोसायटी और युवाओं से भी सुझाव मांगे गए। इसके लिए दो हजार से अधिक बैठकें की गईं। इन सभी के निष्कर्ष से एक्शन प्लान का रोडमैप बना।

सरकार कृषि क्षेत्र में उद्यमशीलता को बढ़ावा दे रही हैं, ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि आधारित उद्योग-धंधों का विकास हो। इसी को देखते हुए कृषि आधारभूत ढांचा फंड का विस्तार किया गया है। गत दिनों इसके तहत सात योजनाओं के लिए 14, 200 करोड़ रुपये जारी किए गए। इसमें डिजिटल कृषि मिशन के लिए 2,817 करोड़ रुपये, फसल विज्ञान पर 3,979 करोड़ रुपये, कृषि शिक्षा एवं प्रबंधन को बेहतर करने के लिए 2,291 करोड़ रुपये और पशु स्वास्थ्य के लिए 1,702 करोड़ रुपये मुख्य हैं। सरकार कृषि क्षेत्र को डिजिटल बनाने की कवायद में भी जुटी है। इसके लिए अक्टूबर के पहले सप्ताह में देश भर में किसानों का पंजीकरण शुरू होगा। किसानों को आधार कार्ड की भांति एक विशेष पहचान पत्र दिया जाएगा, जिसकी सहायता से न्यूनतम समर्थन मूल्य से लेकर किसान क्रेडिट कार्ड जैसे कार्यक्रमों और योजनाओं तक उनकी पहुंच बनेगी। कार्ड होने से सरकार को भी योजनाएं बनाने, उनके क्रियान्वयन और विस्तार में सहायता मिलेगी। सरकार ने अगले साल मार्च तक पांच करोड़ किसानों के पंजीकरण का लक्ष्य तय किया है। पहले सौ दिनों में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की 17वीं किस्त जारी की गई। इसके तहत 9.3 करोड़ किसानों को भुगतान सीधे उनके बैंक खातों में किया गया। न्यूनतम समर्थन मूल्य वाली सभी फसलों पर 100 से लेकर 550 रुपये तक की बढ़ोतरी की गई। सरकार ने प्याज और बासमती चावल से न्यूनतम निर्यात मूल्य हटाया, वहीं रिफाइंड तेलों पर आयात शुल्क बढ़ाया, ताकि घरेलू तिलहनों को अच्छा मूल्य मिल सके।

वर्ष 2014 में सत्ता में आने के बाद से ही मोदी सरकार ने दलहनी - तिलहनी फसलों एवं मोटे अनाजों के समर्थन मूल्य में भरपूर बढ़ोतरी की है। इसके बावजूद दलहनी-तिलहनी और मोटे अनाजों की सरकारी खरीद में अपेक्षित सुधार नहीं आया। इसका कारण है कि देश में सरकारी खरीद, भंडारण और विपणन का ढांचा गेहूं तथा धान जैसी चुनिंदा फसलों एवं इलाकों तक ही सिमटा है। अब सरकार दलहनी - तिलहनी और मोटे अनाजों की समर्थन मूल्य पर सरकारी खरीद, भंडारण एवं विपणन का देशव्यापी नेटवर्क बना रही है। इससे न केवल खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित होगी, बल्कि अनाजों के केंद्रीकृत भंडारण पर होने वाले खर्च में भी कमी आएगी। इसके लिए सहकारिता क्षेत्र में विश्व की सबसे बड़ी भंडारण योजना शुरू की गई है, जिसके तहत प्राथमिक कृषि सहकारी समितियों (पैक्स) के स्तर पर गोदामों का निर्माण किया जा रहा है। इन गोदामों में स्थानीय उपज को भंडारित करके सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत वितरित किया जाएगा। इस प्रकार खेती से लेकर थाली तक विविधता आएगी। सरकार नई राष्ट्रीय सहकारिता नीति को भी अंतिम रूप दे रही है। इसके लिए पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश प्रभु की अध्यक्षता में 48 सदस्यीय समिति का गठन किया गया। सरकार का लक्ष्य अगले पांच वर्षों में तीन लाख पैक्स का गठन करना है, जो अभी 65,000 हैं। इस दिशा में उत्तर प्रदेश सरकार ने एक अनूठी पहल की है। राज्य सरकार एक अक्टूबर से 31 दिसंबर तक मक्का, ज्वार और बाजरा की खरीद करेगी। इसके लिए किसानों का पंजीकरण शुरू हो चुका है। उपज की बिक्री का भुगतान सीधे किसानों के बैंक खाते में किया जाएगा। उत्तर प्रदेश सरकार की यह पहल पूरे देश के लिए नजीर बनेगी। इससे गेहूं- धान वाली सफलता मोटे अनाजों एवं दलहनी- तिलहनी फसलों में दोहराई जाएगी। गेहूं-धान जैसी चुनिंदा फसलों की खेती से आगे बढ़कर सरकार विविध फसलों की खेती और उन पर आधारित उद्योग-धंधों के विकास पर फोकस कर रही है। इसी को देखते हुए बागवानी क्षेत्र के विकास के लिए 860 करोड़ रुपये की योजना मंजूर की है। मछुआरों के कल्याण के लिए भी सहकारी संस्थाओं को मजबूत बनाया जा रहा है। आज भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक देश बन गया है। 2014 में जहां देश में हर साल 80 लाख टन मछली का उत्पादन होता था, वहीं आज भारत हर साल 170 लाख टन मछली का उत्पादन कर रहा है। इसी तरह पशुपालन और दुग्ध उत्पादन के लिए भी सरकार राष्ट्रीय डेरी विकास कार्यक्रम चला रही है। इस तरह ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विविधीकरण से ही लगातार घाटे का सौदा बन रही छोटी जोतों को लाभकारी बनाया जा सकेगा।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब -152107

संपादक की कलम से

नकली-मिलावटी दवाएं

प्रख्यात शायर गालिब के एक शेर का सारांश यह है कि आखिर इस देश को हुआ क्या है? क्या यहां जीना भी आसान नहीं? आम आदमी बीमार भी नहीं पड़ सकता, क्योंकि असली दवा ही मुहाल नहीं है। यह सारांश उन रपटों के संदर्भ में सटीक है, जो केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन ने तैयार की हैं। यह भारत सरकार का संगठन है, जो फार्मा उद्योग के उत्पादन, दवाओं, इंजेक्शन आदि की गुणवत्ता को नियंत्रित करता है। उसने दो रपटें सार्वजनिक की हैं। एक में 48 दवाओं का ब्यौरा है, जो मिलावटी पाई गई हैं। दूसरी रपट में 5 नकली दवाओं का खुलासा किया गया है। चौंकना स्वाभाविक है, क्योंकि इन रपटों में 'पेरासिटामॉल 500 एमजी' जैसी दवा भी है, जो आम आदमी बुखार और शरीर दर्द आदि के लिए, डॉक्टर की पर्ची के बिना ही, खरीदता और खाता रहता है। दवाएं नकली हों या मिलावटी, सभी बड़ी, नामी कंपनियों की बनाई हुई हैं। रक्तचाप के लिए हम अक्सर 'टेल्मा' दवा लेते हैं। उसकी कई किस्में हैं, लेकिन 'टेल्मा-एच' का नमूना नकली पाया गया है। इसका उत्पादन प्रख्यात फार्मा कंपनी 'ग्लेनमार्क' करती है। इसी तरह गैस, एसिडिटी की प्रचलित दवाई 'पैन-डी' भी नकली पाई गई है। अस्थमा, लिवर, एलर्जी, मधुमेह, कैल्शियम और दांत इंफेक्शन की एंटीबॉयोटिक्स दवाएं भी मिलावटी और नकली मिली हैं। आम बीमार आदमी असमंजस में है कि वह लगातार दवा खा रहा है, लेकिन ठीक नहीं हो पा रहा है, तो इसका कारण क्या है? कारण मिलावटी और नकली दवाएं ही है, लेकिन आम आदमी को क्या पता? अधिकांश डॉक्टर भी इस काले धंधे से अनभिज्ञ हैं। गंभीर और नाजुक तथ्य यह है कि 'पेरासिटामॉल' और 'हिंदुस्तान एंटीबॉयोटिक्स लिमिटेड' तो भारत सरकार की कंपनियां हैं।

भारत का फार्मा उद्योग 6 लाख करोड़ रुपए से अधिक का है और हम 200 देशों को दवाइयां सप्लाई करते हैं। क्या ऐसी मिलावटी दवाएं ही निर्यात की जा रही हैं? यदि विदेश में भी इन दवाओं के नमूने फेल पाए गए, तो भारत के निर्यात-कारोबार की छवि और मात्रा का क्या होगा? यहां एक आलेख में ही सभी मिलावटी और नकली दवाओं के नाम देना संभव नहीं है। वे मीडिया में प्रकाशित किए गए हैं, लेकिन अधिकांश दागदार कंपनियां नामी हैं। ऐसा कई बार होता रहा है कि नकली बाजार में छापे के दौरान नकली दवाएं पकड़ी जाती रही हैं। उनमें कैंसर की बेशकीमती दवाएं और इंजेक्शन भी पकड़े गए हैं, लेकिन सरकार और राजनीतिक दल अक्सर खामोश रहे हैं। क्योंकि नामी फार्मा कंपनियों से भाजपा को 61 करोड़, कांग्रेस को 5 करोड़, सपा को 3 करोड़ और आम आदमी पार्टी को 1 करोड़ रुपए के चंदे 'चुनावी बॉन्ड' के जरिए मिले हैं। 'पैन-डी' ने भाजपा को 15 करोड़ रुपए का चंदा दिया है, जबकि तेलंगाना की पार्टी 'बीआरएस' को भी 20 करोड़ रुपए चंदा दिया गया है। प्रख्यात 'सन फार्मा कंपनी' ने भाजपा को 31.5 करोड़ रुपए चंदे में दिए हैं। सवाल है कि क्या चुनावी चंदे के बदले आम आदमी की सेहत से खिलवाड़ किया जा सकता है? नकली दवाओं के कारण अनेक मौतें भी हुई होंगी! फिलहाल उसका डाटा हमारे पास नहीं है। क्या कंपनियों के मोटे-मोटे मुनाफे ही कारोबार का एकमात्र लक्ष्य हैं, बेशक बीमार आदमी बीमार ही रहे या अकाल मौत के मुंह में चला जाए? मिलावटी या नकली नमूने पकड़े गए हैं, तो नामी कंपनियों के रटे-रटाए स्पष्टीकरण हैं कि ये उत्पादन हमारे नहीं हैं। ये नकली दवाएं हैं। 'सन' और 'टॉरेंट' कंपनियों के ऐसे स्पष्टीकरण सामने आए हैं। औषधि नियंत्रण संगठन उन स्पष्टीकरणों को स्वीकार भी कर लेगा, लेकिन किन नकली कंपनियों ने इन उत्पादों की नकल की है और बाजार में जहर बेच रहे हैं, इस पर नियंत्रण कौन लगाएगा? कौन सजा तय करेगा?

राय

खेद है कंगना

हालांकि अपने बयान से पलटी मार कर मंडी से सांसद कंगना रणौत राजनीतिक भूल के आंसू पौंछ रही हैं, फिर भी यहां प्रश्न हिमाचल से लोकसभा में होने का है। किसान विरोधी बयानों के आलम में, सांसद ने पूरी भाजपा को हरियाणा की जंग का प्रायश्चित बना दिया। एक लंबी फेहरिस्त में मोहतरमा कंगना के बयानों के झाड़ पार्टी को परेशान और देश को हैरान कर रहे हैं, लेकिन हिमाचल के लिए यह सियासी हादसा सिद्ध हो रहा है। बेशक कंगना ने जो पाया, उसके पीछे उसकी अपनी शख्सियत, मेहनत और दबंगता रही है, लेकिन सार्वजनिक जीवन में रहते जुबान अलग होती है और यह भी कि उन्हें केवल मंडी संसदीय क्षेत्र का अभिभावक बनना है। अपने कारणों से वह यूं तो देश के हालात में प्रचार की सामग्री सिद्ध हुई हैं, लेकिन न तो उन्हें सियासी माया मिली और न ही राम, बल्कि करियर के नुकसान से वह अपना रुतबा, शोहरत और परिपक्वता के लिहाज से बॉलीवुड की शान भी खो रही हैं। अपने बड़बोलेपन के कारण कंगना को अपनी फिल्मों का नुकसान उठाना पड़ रहा है। खासतौर पर 'इमरजेंसी' फिल्म को लेकर हुए सुलूक को ही यह एक्टर अपने चरित्र में पहचान ले, तो शायद खेद का विषय राजनीति हो जाएगा। इसमें दो राय नहीं कि कंगना चर्चाओं और विवादों का पिटारा अपने साथ लेकर चलती हैं, लेकिन मंडी संसदीय क्षेत्र के लिए यह प्रचार अच्छा नहीं है। मंडी इस बरसात में भी अपने जीवन के संगीत में बरसात के खलल से परेशान रहा, तो कंगना जैसी संपर्कों वाली सांसद से कुछ खास की आशा थी। हैरानी यह कि उनके पास न अल्पाविधि और न बहुआयामी संकल्प हैं। वह राजनीतिक वैमनस्य की जुबान में न घर के लिए कुछ कह पा रही और न ही घाट की भाषा जान पाई। किसान विरोधी बयान को उनकी जुबान का फिसलना नहीं माना गया, तो खेद जाहिर करके वह अपने सियासी सफर की निचली पायदान को अंगीकार कर रही हैं। हम सियासी जीत हार में भूल रहे हैं कि जिन्हें चुन रहे हैं, वे अपनी ही प्राथमिकताओं के घोड़े हैं। हैरानी यह कि देश में साक्षरता दर के उच्च शिखर पर बैठे हिमाचल को अपने जनप्रतिनिधि ही चुनने नहीं आ रहे। इधर हिमाचल में भी कुछ विधायकों-मंत्रियों के कारनामे सुलगते हैं, तो आग सोशल मीडिया के परिदृश्य में सेंकी जाती है। अंततः हिमाचल को ज्वाला से खेलना रास आ रहा है और सियासत बेपरवाह हो कर समाज को चौराहों पर खड़ा कर रही है। धीरे-धीरे शासक वर्ग की टोलियों में कुछ चहेतों, दोस्तों और प्रभावशाली लोगों की तूती बोल रही है।

हम जिन्हें पंचायत में भेजते, वे मनरेगा के इंजीनियर बन जाते हैं और जो नगर निकायों में भेजे जाते, वे अतिक्रमण के बीज उगा कर संपत्तियों के मालिक बन जाते हैं। शिमला जिन्हें भेजा, वे मुद्दों पर सदन से बाहर देखे गए और जो दिल्ली रवाना किए, वे संसद के बैक बेंचर बने रहे। आखिर कितने प्रश्न हिमाचल के, मेरे हलके, मेरे गांव-शहर के, गुम हो गए तेरी फिजूल की चर्चा में कहीं उसूल गुम हो गए। कंगना को जिन आशाओं ने दिल्ली भेजा, वे अब पटरी से उतर गई हैं। अंततः हम अपने भविष्य के पांच साल जिन्हें सौंपते हैं, वे चाहें तो इन्हें पच्चीस कर दें और न समझें तो शून्य कर दें। जरा सोचें जिन्हें हम ग्लैमर, जातीय आधार या दलगत प्रचार के कारण बार-बार चुन रहे हैं, वे हमारी संभावनाओं, प्राथमिकताओं और संवेदनाओं से किस तरह अत्याचार कर रहे हैं। कहीं तो कहें कि गलत जनप्रतिनिधि चुन कर, हमें खेद है।

जीवन के खेल निराले

विजय गर्ग

किसी के किए गलत काम का पर्दाफाश हो जाए तो कई बार अनायास ही हमारे मुंह से निकलता है कि उसका खेल खत्म हो गया। ऐसा अवचेतन मन से निकलता है। वास्तव में जीवन एक खेल ही है। मगर यह क्रिकेट में रनों की संख्या या फुटबाल में गोल की संख्या से तय होने वाला छोटी अवधि का नहीं, बल्कि लंबा चलने वाला खेल है। इसकी समय सीमा हम नहीं तय करते हैं। इसलिए इसमें हार या जीत के नहीं, बल्कि खेल को सही तरीके से खेलने और इसके लिए ईमानदार प्रयास करते रहने के मायने हैं। जीवन के इस अनूठे और अनिवार्य खेल में हमें अपनी प्राथमिकताओं को जानना और जीना है । अगर हम यही नहीं जानते कि हमारे लिए क्या महत्त्वपूर्ण है और कौन-सी चीजें, लोग या स्थान हमारे लिए नितांत अनुपयोगी हैं तो फिर हम सही तरीके से जिएंगे कैसे? प्राथमिकताओं को जानने के बाद ही हम अपना ध्यान उन पर एकाग्र कर सकते हैं। सबसे पहले यह जान और मान लेना चाहिए कि जीवन के व्यावहारिक खेल में यह कभी भी संभव नहीं हो सकता कि कोई लगातार हर बाजी जीतता ही जाए। इसलिए हारने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। हार से सबक सीखना जरूरी है कि आखिर गलती कहां हुई। यह भी जानना जरूरी है कि इसी दौरान कई खेल ऐसे भी खेल खेलने होते हैं जिनमें हारना बेहतर होता है, जीतना नहीं । विशेष रूप से रिश्तों के मामले में यह नियम अवश्य लागू हो जाता है। यह एक मशहूर उक्ति है कि जीवन में आशा और निराशा के क्षण भी रात और दिन की तरह आते-जाते रहते हैं। आशा जहां हमारे जीवन में शक्ति और उत्साह का संचार करती है, वहीं निराशा हमें मृत्यु की ओर धकेलती है। निराश व्यक्ति जीवन से उदासीन और विरक्त होने लगता है। उसे अपने चारों ओर अंधेरे के अलावा कुछ नजर नहीं आता, जबकि आशावादी मौत के मुंह से भी वापस आ जाता है। दरअसल, जीवन एक ऐसा खेल है, जिसमें हमें बेशुमार या अनगिनत लोगों का साथ चाहिए होता है कभी उन्हें अपने साथ लेकर चलना होता है तो कभी हमें उनके साथ चलना होता है। ऐसा तभी सही तरीके से हो सकता है, जब हम व्यवहार कुशल हों, लोगों के साथ मधुरता से बात कर सकें और उनके काम आना सीख सकें। दूसरों से भी हम तभी ऐसी उम्मीद कर सकते हैं जब हम उनके साथ ऐसा व्यवहार करें। जीवन में दैनिक या कतिपय लक्ष्यों के लिए काम करने के हमारे प्रयास सबसे पहले यह पता लगाने के लिए हैं कि हम अपनी श्रेष्ठतम और उच्चतम संभावनाओं से कितनी दूर हैं। हमारे काम के मूल अधिक वास्तविक तरीके से जीने की इच्छा होनी चाहिए। अन्यथा हम व्यर्थ की तुलनाओं, दिखावों और ईर्ष्या के अवचेतन गुलाम हो में सकते हैं या फिर एक सचेत सेवक । विद्वान जेम्स पी कार्से का कहना है कि जीवन परिभाषित समाप्ति वाला नहीं, बल्कि कारोबार और राजनीति की तरह चलने वाला अनंत खेल है, जिसमें खेल को जीत कर समाप्त करने के बजाय खेलते रहने का ज्यादा महत्त्व है। हमें सांस लेने, खाने और अपनी दिनचर्या में रत रहने में आनंद लेना चाहिए। अपने जीवन को लगातार पोषण देना होता है। साथ ही इसे सहज सरल सार्थक रखने के प्रयास करने होते हैं। जैसे विस्तृत सोच वाले नेता ज्यादा मजबूत, व्यापक पहुंच वाला, ऊर्जावान और प्रभावशाली संगठन बनाने में कामयाब होते हैं, वैसे ही बड़ी सोच वाले व्यक्ति जीवन के खेल को कुशलता से खेल सकते हैं।

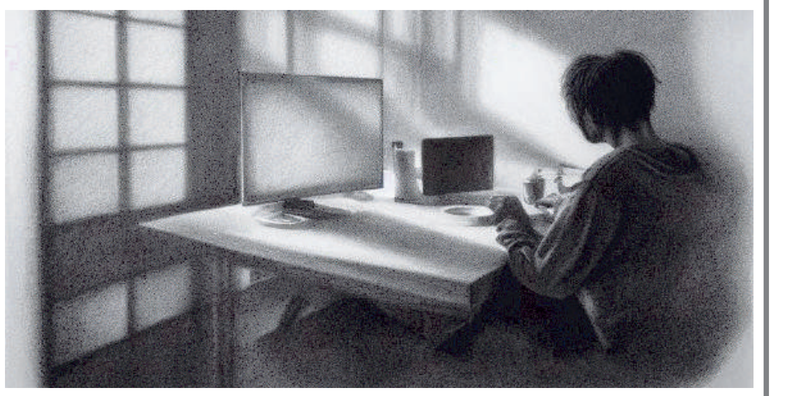

जीवन की गुणवत्ता निखारने और खेल में पारंगत होने के लिए अमेरिकी लेखक और प्रेरक वक्ता साइमन सिनेक की बात पर गौर किया जा सकता है। उनका कहना है कि आपको लोगों पर प्रभाव जमाने के लिए पांच गुण जरूर सीख लेने चाहिए । आगे बढ़कर नेतृत्व करने का साहस, लचीलापन, अच्छे लोगों से प्रतिद्वंद्विता, विश्वसनीय टीम का गठन तथा नैतिक मूल्यों पर विश्वास। जीवन के इस खेल को हम आनंदपूर्वक खेलना चाहते हैं तो किसी औसत, असफल या बिना लक्ष्य के भटक रहे व्यक्ति की तरह नहीं, बल्कि श्रेष्ठ लोगों की तरह सोचना चाहिए। असफल और सामान्य लोग हमेशा आराम के बारे सोचते हैं। उनके मन में लगभग हर किसी के प्रति नफरत भरी होती है। उन्हें लगता है कि नफरत करना और आराम करना आसान है। जबकि वास्तविकता इससे उलट होती है। लोगों से प्यार करना और खुद को अच्छे कामों में व्यस्त रखना ज्यादा आसान है। विनम्रता, प्यार और मेहनत व्यक्ति को लचीला और मजबूत बनाती है, उस घास की तरह जो तूफान में पेड़ों के उखड़ जाने के बावजूद अपना अस्तित्व इसलिए बचा लेती है कि उसमें झुकने का गुण है। कई लोग सोचते हैं कि जीवन कठिन और भयावह है, लेकिन उन्हें शायद पता नहीं होता कि कठिनाइयां ही हमें मजबूत, अनुभवी और चतुर बनाती हैं। फ्रेडरिक नीत्से कहते हैं, चुनौतियों की तलाश करना बनाने का तरीका है। अपने जीवन में भाग्य भी अपने भाग्य को खुद को न केवल स्वीकार करना, बल्कि उससे प्यार करना और स्वयं संवारना भी सीखना चाहिए। अगर हम धारा का हिस्सा नहीं बनना चाहते हैं और कुछ अलग करना चाहते हैं तो सबसे पहले अपने लिए चीजों को आसान बनाना बंद कर देना चाहिए । जीवन का सार्थक अस्तित्व दुख और पूर्णता के रिश्ते पर टिका है। अपने जीवन को सार्थक और आनंददायक बनाने के लिए हमें न सिर्फ खुद का, बल्कि समय-समय पर औरों के लिए भी कुछ अच्छा और उपयोगी करने का प्रयास करना चाहिए। दूसरों के प्रति अच्छी भावना रखना चाहिए और परोपकार करना चाहिए। रोज सुबह उठकर इतना जरूर सोचना चाहिए कि मैं भाग्यशाली हूं कि मैं जीवित हूं ।

ताकि चहकते रहें बच्चे : विजय गर्ग

बच्चों का दिमाग एक खाली स्लेट होता है । हमारा व्यवहार उस पर हमारे बिना चाहे भी अमिट छाप छोड़ रहा होता है, जो उनके आचार-विचार में गाहे-बगाहे प्रतिबिंबित होता रहता है । इसलिए उनके प्रति हमारा बर्ताव वास्तविक रूप में अनुकरणीय होना चाहिए । आमतौर पर परीक्षा के खराब परिणाम आने पर बड़ी सहजता से मां-बाप अपने बच्चे को पीट देते हैं। दरअसल, ऐसा करते हुए वे अपने अभिभावक होने की परीक्षा में बहुत खराब अंक से असफल हो रहे होते हैं। किसी गलती पर उन्हें गलती का कारण समझाने के बजाय थप्पड़ जड़ देना कम समय लेने वाली और आसान राह है। उचित यह होगा कि हमें अपनी संतान की परवरिश में पर्याप्त समय और ऊर्जा खपानी चाहिए । जब बच्चे कोई उपयोग का सामान तोड़ दें तो उन्हें उस सामान की उपयोगिता के बारे में समझाना चाहिए और उसे वापस जोड़ने के काम में संलग्न करना चाहिए। इससे सकारात्मक और दीर्घकालिक परिणाम प्राप्त होते हैं।

पूरे सोशल मीडिया पर 'मम्मी की चप्पल' और 'पापा की बेल्ट' पर चुटकुले पटे पड़े हैं। हिंसक संदर्भ वाले 'लतीफे' तक लोगों को बखूबी गुदगुदा जाते हैं । कारण यह है कि लोगों के लिए बच्चों का अपने मां- बाप द्वारा पीटा जाना सामान्य घटना मानी जाती है। जब कुकृत्यों को अरसे से सामाजिक स्वीकृति प्राप्त हो तो उनके उन्मूलन के विरुद्ध एक भारी जड़ता दिखती है। इसी कारण उनसे संबंधित हास्य की विसंगति लोगों को नहीं दिखती । दिखाए जाने पर वे नकार कर अपने सुविधा क्षेत्र में जमे रहना चुनते हैं। यहां तक कि ख्यातिलब्ध लोग और नेतागण भी इस विषय में सस्ते चुटकुले धड़ल्ले से सुनाते पाए गए हैं। इसलिए इस विषय में हर तबके के लोगों में जागरूकता फैलाना समय की मांग है।

कई लोगों की यह दलील होती है कि बचपन में मार खाने के बावजूद उनके जीवन में अब कोई कठिनाई नहीं है। उन थप्पड़ों की छाप उनके चरित्र में मौजूद होती है, जिसका उन्हें भान नहीं होता। वैसे भी चूंकि किसी व्यक्ति ने यह झेल लिया, इसका मतलब यह नहीं कि किसी को भी उस प्रक्रिया में झोंक दिया जाए। बच्चों के मूलभूत मानवाधिकारों की सुरक्षा के प्रति हमारी जिम्मेदारी अधिक इसलिए हो जाती है कि वे अपने अधिकारों से अनभिज्ञ होते हैं। बच्चों को नजाकत के साथ पाले जाने की जरूरत है, क्योंकि वे क्षमता के भंडार हैं और हमारा उनके प्रति बड़ा ऋण है। उनकी प्रतिभा और सृजनात्मकता जादुई छड़ी की तरह समाज को बदल सकती है, बशर्ते वृद्धि के दिनों में उन पर छड़ी न बरसाई जाए। संयुक्त राष्ट्र बाल अधिकार संरक्षण के एक सम्मेलन ने 2006 में

बच्चों के मानवाधिकार के संबंध में निर्देश जारी कर बच्चों की शारीरिक सजा को वैधानिक हिंसा करार दिया । किसी भी परिदृश्य में इस हिंसा के उन्मूलन के लिए विधायी, सामाजिक, प्रशासनिक और शैक्षणिक कदम उठाने की तसदीक भी की। दुखद है कि इतने वर्षों के बाद भी भारतीय समाज का एक बड़ा तबका बच्चों की पिटाई को उनके विकास का एक जरूरी जरिया मानता है ।

मार के क्षणिक भय के कारण बच्चे मां-पिता की बात मान तो लेते हैं, लेकिन दूरस्थ भविष्य में यह उनके मानसिक स्वास्थ्य के लिए बेहद घातक साबित होता है। युवावस्था में उनके आक्रामक होने की संभावना बढ़ जाती है। जिन भी बच्चों के साथ किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए मार-पीट का खौफ बनाया गया, आगे चलकर उनकी यह मान्यता बन गई कि शारीरिक हिंसा के बूते चीजों का हासिल किया जाना बिल्कुल न्यायसंगत है। वे अपने साथियों, बहन-भाइयों के साथ मार-पीट करते पाए गए। चूंकि उनके मां-पिता ने उनके साथ थप्पड़-घूंसे का सहारा लिया, इसलिए उन्होंने भी अपने बच्चों के साथ वही प्रक्रिया अनुशासनात्मक कार्रवाई के रूप में अपनाई। इस तरह मार-पीट का दुश्चक्र पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होता रहा ।

कई मामलों में मां या पिता की हथेली बच्चों के लिए पुचकार के बजाय मार की पहचान बनी रह गई। उन्हें बड़ी हथेली का डर सताने लगा और वे अपने मां-पिता से भावनात्मक रूप से कटने लगे। जिन्हें बड़ों से नियमित तौर पर मार पड़ी, उनका खुद पर विश्वास और सम्मान क्षीण होता गया । उन्हें लगा कि वे अच्छे आदमी नहीं । उसी मार के भय से जब बच्चों के साथ कोई दुर्घटना घटती है तो वे अपने मां-पिता के पास खुलकर अपनी बात बयान नहीं कर पाते। इसी क्रम में अपनी भावनाओं को लेकर उनमें मुखरता विकसित नहीं हो पाती। ज्यादातर मामलों में किसी को धमकी देने या उस पर धौंस जमाने वाले बच्चे खुद अपने घरों में शारीरिक या मानसिक हिंसा का शिकार होते हैं। शारीरिक दंड का दर्द बच्चों की उत्सुकता और रचनात्मकता निगल जाता है । मां-पिता के साथ भी यह समस्या बनी रहती है कि अगर मार के बावजूद बच्चे उनकी बात पर अमल न कर रहे हों तो वे क्रमशः और हिंसात्मक होते चले जाते हैं। बच्चे भी मार खाते जिद्दी होते जाते हैं और मां-बाप की सजा की इंतहा की परीक्षा लेने पर आमादा हो जाते हैं। यह पूरी स्थिति किसी के लिए भी फायदेमंद नहीं होती। अच्छे कार्य पुरस्कृत होने चाहिए और गलतियों के सुधार के लिए ऐसे वैकल्पिक तरीके अपनाए जाने चाहिए, जिनसे सीख मिले और चोट न पहुंचे।

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार स्ट्रीट कौर चांद एमएचआर मलोट

फेस्टिव सीजन में तगड़ी खरीदारी के मूड में भारतीय, ऑफर के लालच से होते हैं प्रेरित- सर्वे

परिवहन विशेष न्यूज

खरीदारी के दौरान हमेशा से ही मोल-भाव और छूट को तरजीह देते हैं। सर्वे में शामिल 63.82 प्रतिशत उपभोक्ताओं ने कहा कि वे छूट और ऑफर से खरीदारी के लिए प्रेरित होते हैं। 48.77 प्रतिशत ने कहा कि वे परंपरा व सांस्कृतिक महत्व से खरीदारी को प्रेरित होते हैं जो परिवार और विरासत के समय के रूप में दिवाली के महत्व की पुष्टि करता है।

नई दिल्ली। त्योहारी सीजन को लेकर भारतीय उपभोक्ताओं में आशावाद बना हुआ है। यही कारण है कि भारतीय उपभोक्ता इस त्योहारी सीजन में बड़ी खरीदारी की तैयारी कर रहे हैं। थिंक टैंक द भारत लैब ने अपनी ताजा मूड आफ भारत रिपोर्ट दिवाली पल्स-2024 में यह बात कही है। सभी कामकाजी वर्गों के 3,480 लोगों की प्रतिक्रिया के आधार पर तैयार की गई यह रिपोर्ट आम लोगों के खरीदारी व्यवहार को लेकर जानकारी देती है। द भारत लैब की स्थापना रेडीफ्यूजन और लखनऊ विश्वविद्यालय ने संयुक्त रूप से की है।

विज्ञापन से प्रभावित होते हैं भारतीय

खरीदारी के दौरान हमेशा से ही मोल-भाव और छूट को तरजीह देते हैं। सर्वे में शामिल 63.82 प्रतिशत उपभोक्ताओं ने कहा कि वे छूट और ऑफर से खरीदारी के लिए प्रेरित होते हैं। 48.77 प्रतिशत ने कहा कि वे परंपरा व सांस्कृतिक महत्व से खरीदारी को प्रेरित होते हैं, जो परिवार और विरासत के समय के रूप में दिवाली के महत्व की पुष्टि करता है। सर्वे में शामिल आधे से ज्यादा लोगों ने कहा कि वे फैशन और इलेक्ट्रॉनिक्स श्रेणी में इंटरनेट मीडिया इन्फ्लूएंसर्स से प्रभावित होते हैं। वहीं, करीब 41 प्रतिशत लोगों ने टीवी और समाचारपत्रों के विज्ञापनों पर भरोसा जताया।

नए निवेश की तैयारी में करीब आधे लोग

इस त्योहारी सीजन के दौरान सर्वे में शामिल करीब आधे (49.14%) लोग नया निवेश करने की योजना बना रहे हैं। 55.26 प्रतिशत लोगों ने सोने और 40.74 प्रतिशत ने रियल एस्टेट में निवेश की बात कही है। त्योहारी सीजन के दौरान करीब 49.71 प्रतिशत लोग कहीं घूमने की योजना भी बना रहे हैं।

सर्वे की जरूरी बातें

36.18 प्रतिशत लोग पिछले वर्ष के मुकाबले त्योहारी खर्च बढ़ाने की योजना बना रहे।

35.02 प्रतिशत लोगों ने त्योहारी खर्च पिछले वर्ष के स्तर पर बनाए रखने की बात कही।

29.52 प्रतिशत लोग महंगाई के कारण इस बार त्योहार पर कम खर्च की योजना बना रहे।

83.36 प्रतिशत लोगों ने इस बार पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए खरीदारी की बात कही।

86.35 प्रतिशत लोग इस बार त्योहारों के दौरान नए कपड़े खरीदने की कर रहे तैयारी।

70.83 प्रतिशत ने घर की साज सज्जा से जुड़ा सामान खरीदने की बात कही।

60.92 प्रतिशत इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पाद और 48.13 प्रतिशत ज्वेलरी खरीदने की तैयारी में।

58 प्रतिशत लोगों ने हाइब्रिड यानी ऑनलाइन और ऑफलाइन खरीदारी की बात कही।

20.98 प्रतिशत केवल डिजिटल तरीके से खरीदारी करने की बना रहे योजना।

33 प्रतिशत की नया वाहन खरीदने की तैयारी

सर्वे में शामिल 33.62 लोगों ने त्योहारी सीजन के दौरान नया वाहन खरीदने की योजना की बात कही है। यह एक छोटा समूह है लेकिन इसने संकेत दिया है कि वह बड़ी खरीदारी करने जा रहा है। नए वाहन खरीदने की योजना बना रहे कुल लोगों में से 33.05 प्रतिशत ने लोकप्रिय चारपहिया वाहन, 18.88 प्रतिशत ने लग्जरी कार और 48.07 प्रतिशत ने दोपहिया खरीदने की बात कही है।

आयुवर्ग के लिहाज से खरीदारी

20-30 वर्ष के 85 प्रतिशत
30-40 वर्ष के 71 प्रतिशत
40-50 वर्ष के 66 प्रतिशत
50-60 वर्ष 57 प्रतिशत

क्रेडिट कार्ड से आप भी बचा सकते हैं पैसे, बस अपनाने होंगे ये आसान तरीके

Credit Card के इस्तेमाल करने वाले यूजर को लगता है कि यह एक्सपेंस को बढ़ाता है। लेकिन हम क्रेडिट कार्ड के जरिये पैसे भी बचा सकते हैं। इसके लिए कई तरीके अपनाएं जा सकते हैं। अगर आप भी क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल करते हैं तो यह आर्टिकल आपके लिए है। हम आपको इस आर्टिकल में वह सभी तरीकों के बारे में बताएंगे जिसके जरिये आप भी पैसे बचा सकते हैं।

नई दिल्ली। क्रेडिट कार्ड (Credit Card) यूजर्स की संख्या लगातार बढ़ रहा है। ऐसे में कई यूजर को लगता है कि क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल करने के बाद उनका खर्च बढ़ जाता है, जबकि ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। यूजर कुछ आसान तरीके से क्रेडिट कार्ड के जरिये पैसे बचा सकते हैं। हम आपको नीचे क्रेडिट कार्ड से पैसे बचाने के करीके बताएंगे।

सही कार्ड चुनें

अगर आप क्रेडिट कार्ड के जरिये ज्यादा पैसा बचाने चाहते हैं तो इसके लिए जरूरी है कि आप सही कार्ड चुनें। आपको क्रेडिट कार्ड सेलेक्ट करने से पहले अपने खर्चों का विश्लेषण कर लेना चाहिए फिर उसी के हिसाब से कार्ड सेलेक्ट करना चाहिए।

वेलकम बोनस

बैंक अपने नए कस्टमर को इम्प्रेस करने के लिए वेलकम बोनस देता है। वेलकम बोनस में रिवॉर्ड, डिस्काउंट और कूपन शामिल होता है। इस बोनस में यूजर को एक निश्चित अमाउंट खर्च करने के बाद कैश बैक, अतिरिक्त रिवॉर्ड पॉइंट, वाउचर या गिफ्ट कार्ड आदि की सुविधा मिलती है।

क्रेडिट कार्ड बिल का भुगतान

कई बार यूजर क्रेडिट कार्ड के बिल का भुगतान टाइम से नहीं करते हैं। यह उनके सिबिल स्कोर (Cibil Score) को तो इफेक्ट करता है। इसके साथ ही लेट बिल पेमेंट करने पर यूजर को उच्च ब्याज का भी भुगतान करना पड़ सकता है। ऐसे में हमेशा कोशिश करना चाहिए कि क्रेडिट कार्ड के बिल का भुगतान समय से पहले ही करें।

रिवॉर्ड प्वाइंट

क्रेडिट कार्ड के जरिये शॉपिंग करने पर रिवॉर्ड प्वाइंट मिलता है। इस रिवॉर्ट प्वाइंट का इस्तेमाल शॉपिंग, एयरपोर्ट पर लाउंज एक्सेस के लिए किया जा सकता है। कई बैंक रिवॉर्ड प्वाइंट को कैशबैक में बदलने का ऑप्शन भी देता है।

क्रेडिट कार्ड ऑफर

क्रेडिट कार्ड जारी करने वाली कंपनी या बैंक अपने कस्टमर को कई तरह के ऑफर देती है। इन ऑफर का भी इस्तेमाल करके आप पैसे बचा सकते हैं।

विश्लेषकों ने बताया आगामी हफ्ते में कौन-से फैक्टर्स करेंगे बाजार की चाल को तय

Market This Week पिछले हफ्ते शेयर बाजार के दोनों मुख्य सूचकांक अपने नए उच्चतम स्तर पर पहुंच गए थे। शुक्रवार को सेंसेक्स और निफ्टी ने ऑल-टाइम हाई को टच किया था। बाजार में तेजी फेड के फैसले के बाद आई है। ऐसे में अब निवेशकों की नजर कल से शुरू होने वाले कारोबारी सत्र पर है। आगामी हफ्ते में शेयर बाजार के लिए कौन-से फैक्टर्स अहम रहेंगे?

नई दिल्ली। पिछले पांच कारोबारी सत्र में बाजार में शानदार तेजी देखने को मिली है। बाजार में 19 सितंबर के बाद से तेजी आई है। यह तेजी अमेरिकी फेड के ब्याज कटौती के फैसले के बाद आया है। पिछले 3 सत्र से बाजार के दोनों सूचकांक अपने ऑल-टाइम हाई को टच कर रहे हैं। बीते हफ्ते में जारी तेजी का असर क्या अगले हफ्ते भी रहेगा? निवेशकों के मन में ऐसे कई सवाल आ रहे हैं।

23 सितंबर से शुरू कारोबारी हफ्ते को लेकर बाजार विश्लेषकों ने कहा कि इस हफ्ते ग्लोबल मार्केट के संकेत का असर बाजार पर दिखने को मिलेगा। इसके अलावा विदेशी निवेशकों का रूख भी बाजार को एकहद तक प्रभावित करेगा। बता दें कि इस हफ्ते मंथली डेरिवेटिव एक्सपायरी ही है।

अमेरिका के फेड रिजर्व द्वारा ब्याज कटौती के फैसले ने भारतीय शेयर बाजार को प्रभावित किया है। ब्याज कटौती की वजह से ही भारतीय शेयर मार्केट में शानदार तेजी आई। अभी विदेशी निवेशकों ने भारतीय शेयर बाजार के प्रति निवेश का रुख अपनाया हुआ है।

स्वास्तिका इन्वेस्टमार्ट लिमिटेड के अनुसंधान प्रमुख संतोष मीना

इसके आगे संतोष मीना ने कहा पूरे हफ्ते के कारोबारी सत्र में सबसे आकर्षण भरा विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) द्वारा की जाने वाली खरीदारी रही। एफआईआई ने शुक्रवार को 14,000 करोड़ रुपये से ज्यादा निवेश किया है।

ये फैक्टर्स रहेंगे अहम

अगले हफ्ते बाजार की चाल को कौन-से फैक्टर्स प्रभावित करेंगे। इस पर संतोष मीना ने कहा कि आगामी हफ्ते ज्यादा कोई फैक्टर्स बाजार को प्रभावित नहीं करेंगे। अमेरिका के मैक्रोइकोनॉमिक डेटा और विदेशी निवेशकों की चाल का असर शेयर बाजार पर पड़ सकता है। वैश्विक स्तर पर भू-राजनीतिक स्थिति का असर बाजार पर पड़ सकता है।

रेलिगेयर ब्रोकिंग लिमिटेड के एसवीपी, रिसर्च, अजीत मिश्रा ने कहा कि फेड द्वारा ब्याज दर में कटौती का असर इस हफ्ते भी बाजार में रहेगा। निवेशकों को क्रूड ऑयल की कीमतों और विदेशी निवेशकों के फंड फ्लो पर नजर बनाए रखनी चाहिए। यह दोनों फैक्टर बाजार की चाल को प्रभावित कर सकता है।

पिछले हफ्ते कैसी थी बाजार की चाल

अगर पिछले हफ्ते बाजार की चाल की बात करें तो शुक्रवार को सेंसेक्स और निफ्टी अपने ऑल-टाइम हाई पर बंद हुए। शुक्रवार को सेंसेक्स 1,359.51 अंक या 1.63 फीसदी चढ़कर 84,544.31 अंक पर पहुंच गया। इंट्रा-डे में सेंसेक्स ने 84,694.46 अंक को टच कर लिया था।

वहीं निफ्टी 375.15 अंक यानी 1.48 फीसदी की तेजी के साथ 25,790.95 अंक पर पहुंच गया। इसनें भी इंट्रा-डे में 25,849.25 अंक के उच्चतम स्तर को टच कर लिया था।

9 महीने के उच्चतम स्तर पर एफपीआई इनफ्लो, विदेशी निवेशकों को पसंद आ रहा है भारतीय स्टॉक

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय शेयर बाजार में तेजी की एक वजह विदेशी निवेशकों द्वारा जारी निवेश भी है। पिछले 9 महीने में सबसे ज्यादा एफपीआई इनफ्लो सितंबर में हुआ है। इस साल विदेशी निवेशकों ने भारतीय शेयर बाजार में लगातार निवेश किया है। जनवरी अप्रैल और मई में एफपीआई आउटफ्लो देखने को मिला था। अगर सितंबर की बात करें तो विदेशी निवेशकों ने 57359 करोड़ रुपये का निवेश किया।

नई दिल्ली। फॉरेन इन्वेस्टर के द्वारा भारतीय शेयर बाजार में निवेश लगातार जारी है। सितंबर के एफआईआई इनफ्लो डेटा जारी हो गया है। इस डेटा के अनुसार विदेशी निवेशकों ने भारतीय शेयर बाजार में सितंबर के महीने में 57,359 करोड़ रुपये का निवेश किया। एफआईआई इनफ्लो 9 महीने के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया है।

यूएस फेड द्वारा ब्याज दर में कटौती के बाद विदेशी निवेशकों के इनफ्लो में तेजी देखने को मिली है। डिपॉजिटरी के आंकड़ों के अनपसार इस साल अभी तक विदेशी निवेशकों ने 1 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा का निवेश किया है।

सितंबर में इतना हुआ निवेश

डेटा के मुताबिक 27 सितंबर 2024 तक विदेशी निवेशकों ने 57,359 करोड़ रुपये का निवेश किया है। इस महीने केवल एक ही दिन विदेशी निवेशकों ने निकासी किया था बाकी सभी दिनों एफआईआई इनफ्लो हुआ था। विदशी निवेशकों ने दिसंबर 2023 में इक्विटी में 66,135 करोड़ रुपये का निवेश किया था। यह अभी तक का सबसे ज्यादा इनफ्लो है।

इस साल अप्रैल-मई में विदेशी निवेशकों ने 34,252 करोड़ रुपये का आउटफ्लो किया था। जनवरी, अप्रैल और मई महीने को छोड़कर बाकी सभी महीनों में निवेशकों ने निवेश किया है।

एफपीआई इनफ्लों में तेजी के कारण

एफपीआई इनफ्लो में तेजी आने के पीछे कई फैक्टर्स हैं। इन फैक्टर्स में से मुख्य है फेड रिजर्व के फैसले। इस महीने 18 सितंबर को अमेरिका के सेंट्रल बैंक फेडरल रिजर्व ने ब्याज दर में 0.50 फीसदी की कटौती का फैसला लिया था। इसके बाद से एफपीआई इनफ्लो में तेजी आई है। वहीं वैश्विक बाजार से मिले अच्छे संकेत और भारत की ग्रोथ रेट की वजह से भी निवेशक भारतीय बाजार में निवेश कर रहे हैं। आगामी बड़ी कंपनियों के आईपीओ भी निवेश की एक प्रमुख वजह है।

डेट मार्केट में एफपीआई ने सितंबर में Voluntary Retention Route (VRR) के माध्यम से 8,543 करोड़ रुपये और Fully Accessible Route (FRR) के माध्यम से 22,023 करोड़ रुपये का निवेश किया।

कितना खरा है सोना-चांदी, घर बैठे आसानी से करें रियलिटी चेक

परिवहन विशेष न्यूज

सोने -चांदी में भी मिलावट आने लगा है। लोग खरा सोने करके मिलावट भरा बेच देते हैं। ऐसे में इससे बचना बेहद जरूरी है। आपको एक बार अपने गोल्ड और सिल्वर ज्वेलरी की प्योरिटी को चेक करना चाहिए। सोने-चांदी की शुद्धता की जांच के लिए आपको कहीं जाने की जरूरत नहीं है। आप आसानी से घर बैठे इसकी जांच कर सकते हैं।

नई दिल्ली। सोना और चांदी भारत में लोगों को काफी पसंद आता है। फेस्टिवल सीजन में सोने और चांदी की खरीद में तेजी देखने को मिलती है। आज के समय में मिलावट को देखते हुए कई बार लोगों के मन में सवाल आता है कि उनके पास जो सोना-चांदी है वो खरा है या फिर उसमें भी मिलावट भरा है।

दरअसल, कई ठग सोने-चांदी की ज्वेलरी में मिलावट करते हैं और उसे बेचते हैं। अगर आप उनसे ही सोने-चांदी की जांच करवाते हैं तो वह धोखाधड़ी करके उसे भी खरा बता देते हैं। ऐसे में आप अपने घर पर बैठकर आसानी से जांच कर सकते हैं कि आपकी ज्वेलरी की क्वेलिटी कितनी प्योर है।

घर बैठे कैसे करें सोने की जांच

आप कई तरीके से सोने की प्योरिटी को चेक कर सकते हैं। इसके लिए आपको केवल कुछ वस्तुओं की आवश्यकता होगी।

आपको सोने की ज्वेलरी में कुछ बूंद विनेगर की डालनी है। अगर ज्वेलरी का रंग बदल जाता है तो इसका मतलब है कि सोने में मिलावट की गई है। वहीं अगर ज्वेलरी का रंग नहीं बदलता है तो इसका मतलब है सोना खरा है।

सोने के आभूषण को चेक करने के लिए आपको उसे सिरामिक पत्थर पर रगड़ना होगा। पत्थर पर रगड़ने के बाद ज्वेलरी का रंग थोड़ा सुनहरा हो जाए तो इसका मतलब है कि सोना प्योर है।

आप चुंबक के जरिये भी गोल्ड की प्योरिटी चेक कर सकते हैं। इसके लिए आपको गोल्ड की ज्वेलरी के पास चुंबक ले जाना है। अगर ज्वेलरी चुंबक से नहीं चिपकती है तो इसका मतलब है कि ज्वेलरी में कोई मिलावट नहीं है।

आप एक बर्तन में पानी भरकर ज्वेलरी को डालें। अगर ज्वेलरी पानी में नहीं डूबती है तो इसका मतलब है कि ज्वेलरी में मिलावट है। दरअसल, असली सोने की पहचान है कि वह पानी में डूब जाता है।

घर बैठे कैसे करें चांदी की जांच

घर बैठे आप चांदी की प्योरिटी को भी जांच सकते हैं। इसके लिए भी कई तरीके मौजूद हैं।

चांदी की कोई भी ज्वेलरी पर आइस क्यूब रखें। अगर बर्फ का टुकड़ा जल्दी से पिघल जाता है तो इसका मतलब है कि चांदी असली है।

चुंबक के जरिये भी सिल्वर ज्वेलरी की टेस्टिंग की जा सकती है। अगर सिल्वर ज्वेलरी चुंबक की तरफ आकर्षित होता है, इसका मतलब है कि चांदी नकली है।

सिल्वर ज्वेलरी पर ब्लीच की कुछ बूंदे डालें। ब्लीच डालते ही अगर रंग काला हो जाता है तो इसका मतलब है कि सिल्वर असली है। दरअसल, असली सिल्वर ब्लीच डालने पर रिएक्ट करता है।

अगर आपके पास चांदी का सिक्का है तो उसकी प्योरिटी जांचने के लिए आपको सिक्के को फ्लोर पर गिराना है। सिक्के के गिरने के बाद घंटी जैसी आवाज आती है तो इसका मतलब है कि चांदी का सिक्का असली है।

चांदी की ज्वेलरी पर भी हॉलमार्क होता है। आप मैग्नीफाइंग लेंस से देख सकते हैं। असली चांदी पर 925 का स्टाम्प और BIS मार्क होता है।

फोन से चेक करें प्योरिटी

इन सभी तरीकों के अलावा आप मोबाइल के जरिये भी सोने और चांदी की प्योरिटी जांच सकते हैं। इसके लिए आपको अपने फोन में BIS ऐप को इंस्टॉल करना होगा। यहां आपको HUID के ऑप्शन में जाकर 6 डिजिट वाला HUID दर्ज करना होगा। अगर ज्वेलरी प्योर होगी तो आपके पास उसकी सभी डिटेल्स आ जाएगी।

इस हफ्ते 4 दिन ही खुलेगा बाजार, निवेशकों के लिए जरूरी होंगे ये फैक्टर्स

शेयर बाजार की चाल को कई फैक्टर्स प्रभावित करते हैं। 30 सितंबर से नया कारोबारी हफ्ता शुरू हो जाएगा। इस हफ्ते भी शेयर बाजार के लिए कई फैक्टर्स अहम रहेंगे। हालांकि इस हफ्ते शेयर बाजार में केवल 4 दिन ही कारोबार होगा। बुधवार को शेयर बाजार गांधी जयंती के अवसर पर बंद रहेगा। आइए जानते हैं कि इस हफ्ते शेयर बाजार के लिए कौन-से फैक्टर्स अहम रहेंगे।

नई दिल्ली। पिछले हफ्ते शेयर बाजार में रिकॉर्ड तोड़ रैली देखने को मिली है। ऐसे में निवेशक जानना चाह रहे हैं कि कल से शुरू होने वाले हफ्ते में शेयर बाजार की चाल कैसी रहने वाली है। शेयर बाजार के एनलिस्ट के अनुसार बाजार पर ग्लोबल ट्रेंड्स और फॉरेन इन्वेस्टमेंट का असर पड़ सकता है। बता दें कि इस हफ्ते केवल 4 दिन ही बाजार में कारोबार होगा। 2 अक्टूबर 2024 को गांधी जयंती के अवसर पर शेयर बाजार बंद रहेगा।

ये फैक्टर्स रहेंगे अहम

विदेशी निवेशकों के आउटफ्लो और इनफ्लो अहम रहने वाले हैं। अभी तक सितंबर में एफआईआई इन्फ्लो सबसे ज्यादा रहा है। एफआईआई के अलावा कॉमेडिटी प्राइस, यूएस डॉलर इंडेक्स और मैक्रोइकोनॉमिक डेटा भी शेयर बाजार की चाल को प्रभावित करेंगे।

स्वास्तिका इन्वेस्टमार्ट लिमिटेड के शोध प्रमुख संतोष मीना ने कहा कि वैश्विक मंच पर भू-राजनीतिक घटनाक्रम भी शेयर बाजार के लिए एक महत्वपूर्ण फैक्टर्स है।

फेड की दर में कटौती के बाद शेयर बाजार में तेजी जारी रही। विदेशी प्रवाह में तेजी ने भी बाजार को बढ़त हासिल करने में मदद की है। निवेशकों का फोकस कंपनी द्वारा जारी होने वाले दूसरी तिमाही के नतीजों पर बनी रहेगी।

जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के शोध प्रमुख विनोद नायर

अक्टूबर में ऑटोमोबाइल कंपनियों की सेल्स रिपोर्ट और कंपनी द्वारा तिमाही नतीजों का असर शेयरों पर पड़ेगा। निवेशकों को कंपनी के शेयर्स पर फोकस बनाकर रखना होगा। मैन्युफैक्चरिंग और सर्विस सेक्टर के पीएमआई (PMI- Purchasing Managers' Index) डेटा का प्रभाव भी शेयर बाजार पर पड़ सकता है।

हमें उम्मीद है कि फ्रंटलाइन शेयरों के कारण बाजार में तेजी जारी रहेगी।

मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड के शोध प्रमुख, वेल्थ मैनेजमेंट, सिद्धार्थ खेमका

पिछले हफ्ते कैसा था बाजार

अगर बात करें पिछले हफ्ते के कारोबार की तो शेयर बाजार में शानदार तेजी थी। शुक्रवार को भी बाजार ने शुरुआती कारोबार में ही अपने ऑल-टाइम हाई को टच कर लिया था। सेंसेक्स 85,978.25 अंक के ऑल-टाइम हाई पर पहुंच गया। निफ्टी ने भी शुक्रवार को 26,277.35 अंक का उच्चतम स्तर को छू लिया।

मुख्यमंत्री पत्नी रोड शो कर सरायकेला मे ओडिया भाषा में किया संबोधन

कार्तिक कुमार परिच्छा

सरायकेला। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की पत्नी सह विधायक गांडेय कल्पना सेरेन ने टाटा -कांड्रा- सरायकेला मार्ग पर रोड शो करते हुए मुख्यमंत्री मंईया सम्मान योजना का चुनावी प्रचार हेतु सरायकेला के काशी साहू कॉलेज मैदान में पहुंची ।जहां जनसभा में विधायक कल्पना सोरेन, मंत्री बेबी देवी, मंत्री रामदास सोरेन के साथ सांसद जोबा मांझी एवं विधायक सविता महतो शामिल समेत भारी भीड़ जूटी थीं ।

कल्पना सोरेन ने उपस्थित महिलाओं को सरायकेला पूर्व रियासत की राजकीय भाषा ओड़िया से भाषण आरंभ कर , हिंदी , साथाली मे संवाद करते हुए कहा कि कोल्हान कभी झुकना नहीं सीखा है- कोल्हान कभी समझौता कराना नहीं सीखा है। कोल्हान के आदिवासी हमेशा डटकर मुकाबला करना सीखा है और मुंह तोड़ जवाब भी देना सीखा है ।उन्होंने महिलाओं से कहा कि आपके सामने जितना भी बड़ा शत्रु क्यों ना आए आपके सामने जितनी भी कठिन परिस्थिति क्यों ना आए आप कभी नहीं रुकेंगे- हमेशा आगे बढ़ेंगे और डटकर मुकाबला करेंगे। कोल्हान के आदिवासी- मूल वासियो के लिए झारखंड की हेमंत सरकार ने कई तोहफा दिया है उसी में मंईया सम्मान भी है। इस योजना से पूरे झारखंड के आदिवासी मूलवासी महिलाओं का सम्मान बढा है, परंतु केंद्र सरकार

पीआइएल दर्ज कर इस योजना पर ग्रहण लगाना चाहती है। उन्होंने कहा कि हम धन्यवाद देना चाहते हैं उन आदिवासियों का जिन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी अपना सहयोग दिया है।

मंत्री रामदास सोरेन ने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन को झारखंड मुक्ति मोर्चा ने जितना सम्मान दिया है उतना सम्मान किसी पार्टी ने कभी किसी सांसद, विधायक और मंत्री को नहीं दिया होगा। उन्होंने कहा कि भाजपा आदिवासियों का विकास करना चाहती है यह ठीक है परंतु बीजेपी पहले असम के आदिवासियों को अपनी पहचान दें उन्हें मान सम्मान दें, उसके बाद कोल्हान की धरती पर बसे आदिवासियों की विकास करने की बात करें ।उन्होंने नियोजन नीति के संबंध में कहा कि केंद्र सरकार ने इसे वापस कर दिया है, नियोजन नीति भी आदिवासियों के हित के लिए बनाई गई थी अगर आदिवासियों का हित करना चाहती है तो पहले नियोजन नीति पर केंद्र सरकार मोहर लगाएं। इस कार्यक्रम में महिला बाल विकास विभाग के मंत्री बेबी देवी ने भी संबोधित किया। इसके ठीक बाद कल्पना सोरेन ने जिले के राजनगर एवं खरसावां में दो जनसभाओं को संबोधित किया ।बताया जाता है कि ओडिया बहुल होते हुए भी उन्होंने संवाद उड़िया में नहीं की है ।

3 परिवारों ने विकास के नाम पर जाजपुर को लूटा : मुख्यमंत्री मोहन माझी

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़शिा

भुबनेस्वर्: मुख्यमंत्री मोहन माझी ने जाजपुर मे बिजेड़ी पर निशाना साधा। उन्होंने कहा, धर्मचया पियो स्मितारानि की मौत की जांच होगी। जो भी दोषी पाया जाएगा उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। हम मामले की पूरी जांच करेंगे और उसे सजा देंगे। हमने देखा है कि पिछली सरकार ने महिलाओं का कितना सम्मान किया है ।धर्मछाया पीने के बाद स्मिता रानी की नृशंस हत्या कर दी गई। मुख्यमंत्री ने कहा कि कुजी ने उन्हें न्याय देने के बजाय नेता को छुपा कर रखा ।इसी तरह उन्होंने नगाड़ा का मुद्दा भी उठाया और कहा कि जाजपुर के नगाड़ा की हेराफेरी राज्य की नहीं बल्कि पूरे देश की चर्चा है। लगभग 15 बच्चे भोजन के बिना मर गये। जाजपुर की गुरबारी चाची ने चकुंडा के पत्ते तले हुए खाए। 24 साल में जो विकास हुआ, उसके लिए वे और समय मांग रहे हैं। मुख्यमंत्री मोहन माझी ने कहा कि बीजू जनता दल ने 24 साल के शासनकाल में विकास के नाम पर इसे बर्बाद कर दिया है। इसी तरह मुख्यमंत्री ने जाजपुर की जनता से ओडिशा में भाजपा को नंबर वन बनाने का आह्वान किया है। मोहन माझी ने बिना नाम लिए बिजेड़ी के 3 नेताओं पर निशाना साधा है। उन्होंने बीजे पर निशाना साधते हुए कहा कि विकास के नाम पर 3 परिवारों ने जाजपुर को लूटा है। जाजपुर खदानों से भरा है, लेकिन लोग समृद्ध नहीं हुए हैं। मुख्यमंत्री मोहन मांझी ने कहा कि पिछली सरकार में उपेक्षित लोगों को लाभ मिलेगा।

भारत की स्वतंत्रता के लिए शहीद भगत सिंह का त्याग व समर्पण सदा अमर रहेगा : वरिष्ठ समाजसेवी मुशरफ खान

हमेशा, हमें अपने देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी याद दिलाती हैं महान शहीद की शहादत : वरिष्ठ समाजसेवी मुशरफ खान,

"अनन्त सम्मान के साथ शहीद भगत सिंह जी की जयंती पर उन्हें शत-शत नमन"

आगरा,संजय साग़र सिंह। सामाजिक चिंतक एवं वरिष्ठ समाजसेवी मुशरफ खान ने महान क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी वीर सरदार शहीद भगत सिंह जी की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए कहा, महान क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी वीर सरदार शहीद भगत सिंह जी की शहादत हमें हमेशा अपने देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी और कर्तव्यओं को याद दिलाती हैं। अनन्त सम्मान के साथ शहीद भगत सिंह जी की जयंती पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि एवं शत-शत नमन। उन्होंने कहा कि भारत की स्वतंत्रता के लिए उनका त्याग व समर्पण सदा अमर रहेगा और भारत की एकता-अखंडता को अक्षुण्ण रखने के लिए उनका अतुल्य बलिदान सदियों तक हमें प्रेरणा प्रदान करता रहेगा।

श्री खान ने शहीद भगत सिंह जी के विचारों को साझा करते हुए आगे कहा, मर कर भी मेरे दिल से वतन की उल्फत नहीं निकलेगी, मेरी मिट्टी से भी वतन की ही खुशबू आएगी। उनका साहस, उनका जज़्बा, उनकी शहादत हमेशा हमें अपने देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी और कर्तव्य

याद दिलाती है। उन्होंने कहा, सरदार भगत सिंह का जन्म 28 सितंबर 1907 को पंजाब के एक सिख परिवार में लायलपुर के बंगा गांव (अब पाकिस्तान) में हुआ था। सरदार भगत सिंह जी को अंग्रेज़ी हुकूमत ने महज़ 23 वर्ष की उम्र में 23 मार्च 1931 को फांसी दे दी थी। 28 सितंबर को जन्मे शहीद भगत सिंह जी के निधन वाले दिन को शहादत दिवस के तौर पर मनाया जाता है। उन्होंने बहुत ही कम उम्र में हमारे देश की आज़ादी के लिए अपने प्राणों की आहुति दें कर गुलाम भारत के युवाओं को अंग्रेजों से देश को स्वतंत्र कराने के लिए प्रेरित किया और महान शहीदों की शहादत की बजह से हमारे देश को आज़ादी प्राप्त हुई। भारतभूमि की स्वतंत्रता के लिए उनका त्याग व समर्पण सदा सदा अमर रहेगा। अनन्त सम्मान के साथ आजादी के मतवाले शहीद सरदार भगत सिंह जी को उनकी जयंती पर शत-शत नमन।

6 ग्राम पंचायतों के युवा भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया है

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़शिा

भुबनेश्वर : माननीय प्रधान मंत्री का जन्मदिन सेवा के लिए उपलब्ध है। परजंग के माननीय विधायक श्री बिभूति प्रधान की उपस्थिति में 6 ग्राम पंचायतों के युवा भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। इसमें भाजपा कार्यकर्ताओं ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। 100 यूनिट रक्त एकत्रित किया। कार्यक्रम तुमिसिंगा सरस्वती बाल विद्या मंदिर परिसर में आयोजित किया गया। कटेणी गाउ के श्री विदुरथ साहू के नेतृत्व में 100 कार्यकर्ता उपस्थित थे। तुमुसिंगा, कांतपाल, कांतोउ पुटसाही कुसुमुयोडी और अलाबेरेणी रिट्रीट के कई कार्यकर्ता उपस्थित थे। गतिविधियाँ मिनकेतन नायक, प्रदीप साहू, गोपबंधु नायक, अभय बेहरा, दीपू स्वाई, रणबंधु दास और बिस्मय महाखुड की देखरेख में आयोजित की गईं।

आदिवासी समुदाय को सूदखोरों से बचाएगी सरकार, रेडमैप हुआ तैयार

आर्थिक संकटों के कारण सूदखोरी के कुचक्र में फंसकर बर्बाद होने वाले आदिवासी समुदाय को बचाने के लिए केंद्र सरकार ने महत्वपूर्ण कदम उठाया है। पंचायत उपबंध (अनुसूचित क्षेत्रों पर विस्तार) अधिनियम- 1996 यानी पेसा अधिनियम में शामिल दस राज्यों में आदिवासी सूदखोरी में न फंसें इसके लिए सुरक्षा कवच बनाने जा रही है। यह कवच मजबूत कानून उसे पालन कराने के लिए प्रतिबद्ध अधिकारियों और पंचायत प्रतिनिधियों का होगा।

नई दिल्ली: आर्थिक संकटों के कारण सूदखोरी के कुचक्र में फंसकर बर्बाद होने वाले आदिवासी समुदाय को बचाने के लिए केंद्र सरकार ने महत्वपूर्ण कदम उठाया है। पंचायत उपबंध (अनुसूचित क्षेत्रों पर विस्तार) अधिनियम- 1996 यानी पेसा अधिनियम में शामिल दस राज्यों में आदिवासी सूदखोरी में न फंसें, इसके लिए सुरक्षा कवच बनाने जा रही है। यह कवच मजबूत कानून, उसे पालन कराने के लिए प्रतिबद्ध अधिकारियों और पंचायत प्रतिनिधियों का होगा। इस पर अमल कैसे किया जाएग, इसका रोडमैप तैयार कर मध्य प्रदेश सरकार ने केंद्र सरकार के पंचायतीराज मंत्रालय को सौंप दिया है। अब संबंधित राज्यों का प्रशिक्षण शुरू होने जा रहा है।आदिवासी बहुल राज्यों में आदिवासी समुदाय को संपत्ति, संस्कृति और वनोपजों पर अधिकार मिल सके, इसके लिए 1996 में पेसा अधिनियम बनाया गया।

निजी संस्था को नहीं मिलेगा ब्याज पर कर्ज

अटल बिहारी सरकार द्वारा बनाए गए इस अधिनियम में निर्धारित मानकों के आधार पर मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा, झारखंड, गुजरात और हिमाचल प्रदेश को शामिल किया गया। पेसा अधिनियम में अधिसूचित राज्यों को सूदखोरी पर नियंत्रण के लिए कानून बनाने का अधिकार दिया गया है। उसी के तहत आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में कानून है कि किसी निजी संस्था को ब्याज पर कर्ज देने का लाइसेंस ही नहीं दिया जाएगा। हिमाचल प्रदेश में कानून है कि ग्राम सभा द्वारा पांच सदस्यीय ऋण नियंत्रण समिति बनाई जाएगी। बैंक व कर्ज देने वाली संस्थाओं को निर्देश है कि सिर्फ इस समिति की उपस्थिति में ही कर्ज दिया जाएगा। झारखंड का कानून है कि कोई भी व्यक्ति कर्ज देने के बदले गहना या कोई वस्तु गिरवीं नहीं रख सकता। इस तरह के अलग-अलग कानून होते हुए भी आदिवासी फंस इसलिए रहे हैं, क्योंकि न सिर्फ आदिवासी समुदाय, बल्कि इन क्षेत्रों के पंचायत प्रतिनिधि और जिम्मेदार अधिकारी तक इससे संबंधित कानूनों से अनभिज्ञ हैं।

वोटर कार्ड से बड़ा कोई कार्ड नहीं! : अंकुर शरण

वोट देना हर भारतीय नागरिक का अधिकार ही नहीं, बल्कि उसकी जिम्मेदारी भी है। लेकिन यह अधिकार तभी सार्थक हो सकता है, जब आपके पास वोटर कार्ड हो। वोटर कार्ड न सिर्फ आपकी पहचान का प्रमाण है, बल्कि यह लोकतंत्र में आपकी भागीदारी का जरिया भी है।

वोट की ताकत आपके हाथ में है, और इस ताकत का सही उपयोग तभी हो सकता है जब आप मतदान करेंगे। हर वोट की गिनती होती है और आपका एक वोट देश की दिशा और दशा बदलने की शक्ति रखता है।

वोटर कार्ड से बड़ा कोई कार्ड नहीं!

आज के युवा क्रेडिट कार्ड, फन ज़ोन कार्ड और न जाने कितने कार्ड बनवाने में शान समझते हैं, पर जब बात वोटर कार्ड की आती है, तो या तो टाल जाते हैं या कहते हैं – ₹वोट डालने का क्या फायदा? कोई कुछ करता तो है नहीं। मुझे राजनीति से नफरत है।₹

लेकिन सवाल यह है, क्या सिर्फ बोलने से आप कुछ बदल पाएंगे?

वोट देना ही वो शक्ति है जिससे आप बदलाव की शुरुआत कर सकते हैं। अगर आपको सच में सिस्टम बदलना है, तो वोट डालना शुरू करें।

युवाओं को विशेष रूप से यह समझना चाहिए कि वोटर कार्ड समय रहते बनवाना कितना जरूरी है। यही वह साधन है जिसके द्वारा आप अपने देश के भविष्य का निर्णय कर सकते हैं। यदि आपने वोट नहीं किया, तो यह वैसा ही होगा जैसे आपने अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली हो।

हमारे लोकतंत्र में हर वोट का महत्व है। जीत या हार से भी ज्यादा जरूरी है कि हम अपने वोट का सही प्रहार करें। गलत को सही करने और सही को मजबूत करने के लिए आपका वोट ही सबसे बड़ा हथियार है।

वोट ज़रूरी है, बहाने नहीं!

अगर आप वोट नहीं देते, तो आपको सरकार के खिलाफ बोलने का भी अधिकार नहीं है। किसी भी बदलाव की मांग तभी जायज़ है जब आप अपनी जिम्मेदारी निभाएं। अगर आपको सच में कुछ बदलना है, तो आगे आइए और वोट करें।

वोट देना सिर्फ एक अधिकार नहीं, बल्कि आपकी आवाज़ है। ये बहाने बनाने का वक्त नहीं है – अगर आपको देश का भविष्य संवारना है, तो सबसे पहले अपना वोट दें। याद रखिए, बदलाव की शुरुआत आपके वोट से ही होती है।

इसलिए, सभी युवाओं से यह विनम्र अपील है कि वे समय रहते अपना वोटर कार्ड बनवाएं और वोट करने के अपने अधिकार का इस्तेमाल करें। यही आपके बेहतर भविष्य की कुंजी है, और आपकी वोट की ताकत तभी काम आएगी जब आप मतदान करेंगे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023